

कुशाग्रिभिर्मलेन-वरावर

पठिवाहृषतिस्थाकृतदानविधिपुस्तकं
त्राजोतिश्चानन्दराजोपाध्यायपटुकोस्थिदं

2170 I

132

मनुननासिय॥वास्यायधन॥१

ॐ नमो श्री गणेशाय ॥ श्री गुरुभ्यो नमः ॥ श्री लीलेश्वराय नमः ॥ ॐ अथ मन्त्रः ॥
या कलशस्काय नमः ॥ कलशमलजाढावर्मकल्ययाय ॥ अथ अग्निनमासं गुरु
यदयथातिथियथानन्दयथागयथावासयथावासिगणसवितरियथावा
सिगणवन्द्यमसि ॥ काश्याय ॥ गायथा नामदास ॥ इन्द्रिन्द्रदूरवनिवृत्तिमृत्तिद्वयनमः
यदगमनदशमध्वमध्वयक्रयनरुलधनधान्यमृगान्वितवृक्षस्य त्रयमयावद्विन्न
विजयदुर्घकामादशमीयर्थं तद्गुणवाहनयूजां कविषु ॥ धनसंकल्ययाय ॥ वन्द्य

(गमयन (थ) ॥ (थ) न च्चायनियल व न सिंधु न चायय क चाय ना य हा ल (थ) न र्य क
 न नी र्थ न या व क ल न नं दु द्वि मी न मू डा न ध्रि न्द्र न न र्य च न ल न का य ल न द य क
 उ व व ल न न दं विल पि बा न रु न नं स लि यी स जू द न (ग) य न व स स्त्रा न न या व का य
 य द्वा क ल हा य क ल य द्वा हा ल य का ध र्म य द्वा हा ना व स वा व न ॥ व न सिंधु ज ज म
 का न का खा य क पू जा या या ॥ व व नू ल य न म ॥ गं ग ज ल न नं ग मृ हि का न ॥ स न
 जू द न न ॥ ध न धू न का व न्या स या य म हि व म र्द नी या न्या स या य ॥ म हि व हि सि क

वेनाह्ना नायनमः॥ॐ अने चर्यायनमः॥ॐ अनकायनमः॥ॐ यशायनमः॥ॐ म
र्यामधुलाय दशकलात्मनं नमः॥ॐ साममधुलाय दशकलात्मनं नमः॥ॐ
मैवक्रिमधुलाय दशकलात्मनं नमः॥सं सत्वायनमः॥नं वज्रमं नमः॥नं ममं नमः॥
॥ॐ आत्मनं नमः॥ॐ अकृतात्मनं नमः॥ॐ यत्र मात्मनं नमः॥ॐ आनात्मनं नमः॥
ॐ अयरायनमः॥ॐ मायायनमः॥ॐ अयायनमः॥ॐ सत्तायनमः॥ॐ विद्युद्वायन
नमः॥ॐ नदिनं नमः॥ॐ सयरायनमः॥ॐ अजायनमः॥ॐ सर्वसिद्धिदायनः

मः॥ॐ वज्रनखदशायुधाय महामिहाय ह्रीं हूँ ॥ धनियूजा ॥ ध्यान ॥ च तस्मान्न
कतवा नावजादतं ॥ गजगयवसीनिर्गमविभालिनिक्कुलमष्टिर्गानोमिरावः
विलाचर्ना ॥ मदिभाकमाङ्गनिषदुषी ॥ रवचक्रकृपावखटकास्मृल्लकं कर्तुनी
मपि विरुतिं निजवाङ्गलि ॥ गानि ॥ गखर्ना ॥ ध्यानयूष्यनमः॥ॐ आवाहमादिमूपाकं न
॥ॐ वज्रधनमः॥ॐ यूष्याङ्गलि ॥ ३ ॥ अर्घ्यसर्लखज्जदतसंताहामलकृणकूकूमः
वालयाततयाव ॥ यनय ॥ॐ अर्घ्यनीमंगलाकालीरुद्रकालीकयालिनी ॥ दूर्गाकमा

संशुलाय नमः॥ हं न कुं नमः॥ जूवन्ना (धे) नमः॥ कं मा रु श्रथे नमः॥ र्वं को मा ६
थे नमः॥ टं वेष् नमः॥ नं वा ना धे नमः॥ र्वं ल्या (धे) नमः॥ र्वं वा मू भु ये नमः॥
नं म दाल क्थे नमः॥ लूं ल्या य नमः॥ नूं जू नय नमः॥ मूं य मा य नमः॥ दूं ने ऋ नय
नमः॥ वूं व नू धय नमः॥ र्वं वा य व नमः॥ सूं क व ना य नमः॥ दूं धी भ ना य नमः॥
जूं न ना य नमः॥ डूं व न्ना (धे) नमः॥ वूं व द्वा य नमः॥ नं न क्थे नमः॥ दं द धु य
नमः॥ र्वं र्व द्वा य नमः॥ र्वं वा धय नमः॥ जूं जूं क्थे नमः॥ नं न द थे नमः॥ नं नू

ला य नमः॥ नं च का य नमः॥ र्वं य द्वा य नमः॥ यूं धी ज लि नमः॥ कूं म दि व म दि न्ने न
मः॥ व लि या न वा य द्धि ॥ व लि वि य ॥ कूं उ व व लि म दि व म दि न्ने नमः॥ ३ ॥ ग्य ना च न
यं न न ॥ च न न व दि न्ने यूं धी प वि र्ण पा य ना न न ॥ आ प दं रु व न न ति र्ण ल क्थे र्व न नि स
व दा ॥ सिं दू व न ॥ सिं दू व न्नी स य कि धी सो रा ग्थ सं य दं ॥ स य भे ज य मा धा नि सिं दू व द्धि
दा य कं ॥ य ज म का नं ॥ य क्थे वी न य न मं व द्धि सृ ग य क लि नं ॥ गृ द्धा ना य न मं भे नि
रु कि ल व द्धि न म या ॥ यूं धी नं ॥ वृ ति धु व न्ना न ज्वा का स्मा ल ॥ र्वं य न्ना न वा क नं ॥

युष्मन् कामदं धार्य सर्वार्थसिद्धिदायकं । न ह्यहममरुनि यथायुक्तं कर्तुमया ॥ य
 वावीहिरुलती वृत्तं ॥ रुलं रुलादिनाम्युलमिदं कं वासुसर्वगं ॥ अमुदात्तम
 जाम्बीनं रुलाः ॥ ययनिगृह्यतां ॥ वा न धूयतं ॥ अमुत्रुत्तुनीधेवकार्यं वमृगनाशिक
 ॥ धूपवासश्च सर्वेषां धूपाः ॥ ययनिगृह्यतां ॥ दीपनं ह्यंतालपूरं ॥ सुपकाद्युददीः
 यं सर्वगुनिमिनायकं । सवाक्काज्ञा कर्तव्या निदीयाः ॥ ययनिगृह्यतां ॥ नैव शनं ॥ म न व
 डावधि ॥ धनजा ॥ वृसावा ॥ लुवसियाति ॥ यूनीमाध ॥ दागना ॥ ह्यसना ॥ धनिया

त १ ॥ धनं नयाडा ॥ अर्चनमहानसंदिर्वा नसे ॥ वरि ॥ समन्विनं । अहं नैव श्यादिकं तु
 र्यगृहानयत्रमं धनी ॥ ह्यय ॥ ॥ नयिका नमस्ववासं दौ दुर्गन्धेनमः ॥ ग्वाल
 नं ॥ रुलपुरुकसंयुक्तं कार्यनादिसुवागिनं मुखकानिकं नैव रुद्रं नाम्बुनं ययनिगृह्य
 तां ॥ नूकन दकिना ॥ उ नोधिकमिदं कर्मयुदिद्विदमकिदं । कनर्मपूषतां स
 र्वदकिनां ययरोक्तं ॥ ॥ अमहिषमहिनी नमः ॥ जयधनुनिनयाय १०८ ॥ ॥
 प्राथना ॥ महिषमहिनामायत्रामुधुमं मालिनि । उवाभावां अकिजयदहिदहि
 नभासुनं ॥ सर्वमङ्गलमंगली निवसर्वार्थसाधिकं स न न्यवकं दविना नायनिनभा

[illegible][illegible]

कंदिचननयाय ॥ ॥ गुननमस्कात्रयाय ॥ ० ॥ धर्मधुलमकस्वाननय ॥ कंधः
 वजाकावकात्रयावजाय ॥ ॥ अखधुमधुलाकारं वार्पयनवनावन ॥ तस्यदीद
 गिनंयननमोऽष्टीगुनवै नमः ॥ ॥ देवयाद्यावसकस्वाननन ॥ ॥ नैद्यावदेवना
 आनमः ॥ ॥ याधायामयाय ॥ ॥ १६ जवनयावखवनसादूकाय ॥ ॥ ६४ नयानं
 ३२ जवनसायिनं ॥ ॥ रुतधुद्धि ॥ ॥ ६४ धनधवजीवात्मा आदिनमाउलवाकस
 सुदत्रसनिववनायनाथ ॥ ॥ १६ जवनयावखवनसादूकाय ॥ ॥ ६४ नयानं
 नय ॥ ॥ ३२ खवनयावजवननाउन ॥ ॥ १६ जवनसादूकाय ॥ ॥ ६४ नयानं

य ॥ ॥ ३२ खवननाउन ॥ ॥ ६४ धककायावथायथायसंन ॥ ॥ याधयतिष्ठा ॥ ॥ ॐ
 दीकोऽं ॥ ॥ ६४ रीममनसयाधमसर्वन्त्रियादिः ॥ ॥ ६४ गत्यसर्वत्रिंतिर्दुस्वाहा ॥
 ॥ ॥ न्यास ॥ ॥ ६४ अम्नाय रुट् ॥ ॥ ॐ गुग्गुलीनमः ॥ ॥ ॐ गुग्गुलीनमः ॥ ॥ ॐ गुग्गुलीनमः ॥ ॥
 वा नास ॥ ॥ ६४ मधुमायावषट् ॥ ॥ दधुनास ॥ ॥ ॐ गुग्गुलीनमः ॥ ॥ ॐ गुग्गुलीनमः ॥ ॥
 निष्ठायावषट् ॥ ॥ वा नास ॥ ॥ ६४ कवनवयुष्ठाया रुट् ॥ ॥ कवनवस ॥ ॥ ॐ द्वादयाय नमः
 ॥ ॥ ॐ गुग्गुलीनमः ॥ ॥ ॐ निवसस्वाहा ॥ ॥ ॐ निवसस्वाहा ॥ ॥ ॐ निवसस्वाहा ॥ ॥ ॐ निवसस्वाहा ॥
 यद् ॥ ॥ कवनयाय ॥ ॥ ॐ निवसस्वाहा ॥ ॥ ॐ निवसस्वाहा ॥ ॥ ॐ निवसस्वाहा ॥ ॥ ॐ निवसस्वाहा ॥

[illegible]

याय ॥ ह्रीं आ ध न न क्वा दि श्या न म ४ ॥ रु द्मं वं र्ण र व ज र्घा म न व म धु ल स र्ण ॥ न म ४ र्ण
ख न र्ण र व ज र्घा म ॥ उं रं त स्त्वा न क च ल नं ॥ र्ण कू ष म डा ष का का या व र्ण र व स र्ण ॥ उं र्ण
(ग व य मू नं रं व (म दा व नि म न स्र ति न र्म द सिं धू का वं नि ज ल स्मि त्मं नि ध रू व ॥ उं
१० ज य य ॥ र्ण ध नू मू डा क नं ॥ ह्रीं अ व गु षु न ॥ ग ल ग य दि र्ण ध न या य ॥ ध र्ण र व न थ
मं द व यू जा आ न र्ण दा य ॥ उं री मं र्ण ना य वि ष्णु व द्वा द दा य धी म हि । त न्ना नू द ४ य
दा द या ७ ॥ ॥ उ वा यू जा (म ध न या य ॥ र्ण ण ठि का ष वा क यं क वा या व ॥ ह्रीं आ ध न
न क य न म ४ ॥ रं त स्त्वा न त या व यू जा या य ॥ ज य य ॥ र्ण १० र्ण १० र्ण १० ॥ उं न क मं व य

नैवमस्तु नमस्तु मयि धूर्व । कथा इवां वस्तु रुग्णं न न नासयामाह ॥ सूर्यमलुलसं
 रुग्णं वस्तु नमस्तु मयि धूर्व । अमावीजमथ दविष्टु कश्चादिभावात् ॥ देवा नीयन्तः
 वावीजं वस्तु नमस्तु मयि यदि । न नमस्तु न न दविष्टु रुग्णं वा पादु ॥ धन ३ ॥ ॥ दौर्गा
 कौर्गा कौर्गा कौर्गा कौर्गा ४ सुधा कश्चादि विभावय अमृतं आवय आवय स्वाहा ॥ धन १२ ॥
 मूल ८ ॥ वीधन मूडाकन ॥ दूँ अ वगुष्ठु न ॥ रुट्ताल उय दिग्धनयाय ॥ व
 धन ८ ॥ यानि मूडाकन ॥ ६० निःशधन ॥ ॥ भवेतां गुह्यादि ॥ य १० व १० वीधन
 मूडाकन मूलमकुल जयलय धन ८ ॥ ॥ धन पाठ स्मय नयाय ॥ वीधनिका

वाक्यं कथाय ॥ पूजायाय ॥ दौर्गा धन ४ कि कमला सनाय नमः ॥ मंच सल
 रुट् धन ८ ॥ मलुल सनया वपूजायाय ॥ मंच क्रिमलुलाय धूमार्चितादि दक्षकला
 त्मने नमः ॥ पाठ स व रुट् धन ८ मंचि सन ॥ पूजायाय ॥ दौर्गा सूर्यमलुलाय नयि न्या
 दि द्वादक्षकला त्मने नमः ॥ मूल धन ३ धन पूजायाय ॥ ॐ साममलुलाय अमृ
 तादि वा ३ धन कला त्मने नमः ॥ वीधन मूडाकन ॥ दूँ अ वगुष्ठु नयाय ॥ ताल उय
 दिग्धनयाय ॥ मूल नयुष्या जलिन शरवर्त नल पूजायाय ॥ रुट् दयाय नमः ॥
 ॥ मूल नजय नय धन १ ॥ वन स्नान नयानि मूडाकन ॥ धन रवन थमहाय ॥ वन

४ तीर्थजयं

नायनिवंदयामि॥ म॥ ध॥ ते॥ ॥ रं॥ ॐ॥ दी॥ य॥ क॥ न॥ स॥ न॥ क॥ य॥ री॥ भ॥ श्व॥ ना॥ य॥ नि॥ व॥ द॥ या॥ मि॥
 ॥ आ॥ च॥ म॥ न॥ ते॥ ॥ रं॥ य॥ न॥ वा॥ च॥ म॥ नी॥ य॥ स॥ न॥ क॥ य॥ री॥ भ॥ श्व॥ ना॥ य॥ व॥ ॥ य॥ र्ष्या॥ ज॥ लि॥ ते॥ ३॥
 द॥ व॥ द॥ वी॥ या॥ ३॥ न॥ र्प॥ ध॥ या॥ य॥ ॥ म॥ ल॥ स्त्रा॥ हा॥ धी॥ री॥ भ॥ श्व॥ न॥ या॥ दू॥ कां॥ न॥ र्प॥ या॥ मि॥ न॥ म॥ ४॥
 ॥ ३॥ म॥ ल॥ स्त्रा॥ हा॥ धी॥ दी॥ य॥ दी॥ द॥ वि॥ या॥ दू॥ कां॥ न॥ र्प॥ या॥ मि॥ न॥ म॥ ४॥ ३॥ य॥ नि॥ वा॥ न॥ य॥ पू॥ जा॥
 या॥ य॥ ॥ रं॥ ह॥ द॥ या॥ य॥ न॥ म॥ ४॥ रं॥ जि॥ न॥ स॥ न॥ म॥ ४॥ रं॥ मि॥ र॥ वा॥ ये॥ न॥ म॥ ४॥ रं॥ क॥ व॥ वा॥ ये॥ न॥
 म॥ ४॥ रं॥ न॥ वा॥ य॥ न॥ म॥ ४॥ रं॥ अ॥ स्त्रा॥ य॥ न॥ म॥ ४॥ ॐ॥ ति॥ र्ज॥ ग॥ य॥ पू॥ जा॥ ॥ द्वां॥ य॥ धि॥ छि॥ न॥ म॥ र्क॥
 थ॥ न॥ म॥ ४॥ द्वां॥ अ॥ स्त्रा॥ न॥ म॥ र्क॥ थ॥ न॥ म॥ ४॥ द्वां॥ द्वां॥ रं॥ म॥ म॥ र्क॥ थ॥ न॥ म॥ ४॥ द्वां॥ द्वां॥ दू॥ य॥ दी॥

द॥ वी॥ न॥ म॥ ४॥ द्वां॥ न॥ क॥ ल॥ म॥ र्क॥ थ॥ न॥ म॥ ४॥ द्वां॥ स॥ रु॥ द॥ व॥ म॥ र्क॥ थ॥ न॥ म॥ ४॥ द्वां॥ व॥ न॥ या॥ ला॥ य॥ न॥
 म॥ ४॥ द्वां॥ य॥ लि॥ का॥ य॥ न॥ म॥ ४॥ द्वां॥ कौ॥ कौ॥ कौ॥ मा॥ वा॥ य॥ न॥ म॥ ४॥ द्वां॥ कौ॥ कौ॥ ति॥ म॥ र्क॥ थ॥ न॥ म॥ ४॥ ॥
 ध॥ ध॥ र्म॥ म॥ र्क॥ थ॥ न॥ म॥ ४॥ ॥ य॥ र्ष्या॥ ज॥ लि॥ ते॥ ३॥ ॐ॥ रं॥ म॥ श्व॥ ना॥ य॥ वि॥ द्वा॥ रं॥ व॥ द॥ द॥ हा॥ य॥ धी॥ म॥
 हि॥ न॥ ना॥ व॥ द॥ य॥ या॥ द॥ या॥ ७॥ ॥ य॥ पू॥ जा॥ ॥ रं॥ अ॥ स्त्रा॥ न॥ ग॥ रं॥ व॥ वा॥ य॥ न॥ म॥ ४॥ ॐ॥ ॐ॥ न॥
 व॥ रं॥ व॥ वा॥ य॥ न॥ म॥ ४॥ द्वां॥ द्वां॥ व॥ धु॥ रं॥ व॥ वा॥ य॥ न॥ म॥ ४॥ रं॥ म॥ र्क॥ थ॥ न॥ म॥ ४॥ द्वां॥ द्वां॥ न॥
 रं॥ व॥ वा॥ य॥ न॥ म॥ ४॥ रं॥ न॥ क॥ पा॥ ल॥ रं॥ व॥ वा॥ न॥ म॥ ४॥ द्वां॥ द्वां॥ रं॥ म॥ र्क॥ थ॥ न॥ म॥ ४॥ रं॥
 अ॥ रं॥ स॥ हा॥ व॥ रं॥ व॥ वा॥ य॥ न॥ म॥ ४॥ रं॥ व॥ द्वा॥ रं॥ न॥ म॥ ४॥ रं॥ म॥ र्क॥ थ॥ न॥ म॥ ४॥ रं॥ व॥ को॥ मा॥ य॥

मार्गयनमः॥ॐ अतनायनमः॥ॐ वनायनमः॥ॐ वृथिवेनमः॥ॐ कील
समुद्रायनमः॥ॐ श्वनदीपायनमः॥ॐ मणिमधुपायनमः॥ॐ कल्पनवन
मः॥ॐ मणिवदिकायेनमः॥ॐ नलसिंहासनायनमः॥ॐ धर्मायनमः॥ॐ क्का
नायनमः॥ॐ वेनायनमः॥ॐ नैश्वर्यायनमः॥ॐ अधर्मायनमः॥ॐ क्कान
यनमः॥ॐ अवेनायनमः॥ॐ अनेश्वर्यायनमः॥ॐ अतनायनमः॥ॐ
यमायनमः॥ॐ सूर्यमधुलायददकलात्मननमः॥ॐ उमासमधुलायः
॥ॐ कलात्मननमः॥ॐ मवक्रिमधुलायददकलात्मननमः॥ॐ सखायन

मः॥ॐ वज्रमनमः॥ॐ नममनमः॥ॐ आत्मननमः॥ॐ अतनात्मननमः॥ॐ यय
वमात्मननमः॥ॐ कीकानात्मननमः॥ॐ अयरायेनमः॥ॐ मीमायायेनमः॥ॐ उज
यायेनमः॥ॐ नैश्वर्यायेनमः॥ॐ नैविश्वर्यायेनमः॥ॐ नदिनेनमः॥ॐ मयरायेन
मः॥ॐ अजरायेनमः॥ॐ अ४सर्वसिद्धिदायेनमः॥ॐ वज्रनखदकायधायमहासि
हायदद॥ॐ धनियूजा॥ ॥ ध्यानयाय॥ॐ वनखानअदगवावावजावने॥ॐ
गवूजायवसंनिर्णमणिमोलिनिक्कुलमणिर्णमिणवविलाचनी॥ॐ महि
षाकमाहनिषदुषी४॥ॐ खनककयाधवठकामूलकं कर्जनीमयिविजर्णनिः

[illegible]

ट नित्रसंस्वाहा॥ महिषहिं नयदूँरुट निखायेवषट् ॥ महिषैरुनरुनकवचायदूँ
 ॥ महिषहिं नयदूँरुट निखायेवषट् ॥ महिषैरुनरुनकवचायदूँ ॥ महि
 षसृदिनिदूँरुट ननुनयोयवोषट् ॥ महिषसृदिनिदूँरुट अस्त्रायरुट ॥ ॥ श्री
 दुर्गायै नमः॥ ॐ वनेयै नमः॥ ॐ अय्यायै नमः॥ ॐ कनकयेलायै नमः॥ ॐ क
 र्तिकायै नमः॥ ॐ अरुययदायै नमः॥ ॐ कनकायै नमः॥ ॐ अस्त्रायै नमः॥
 र्वेवकायै नमः॥ ॐ अरिदायै नमः॥ ॐ अस्त्रायै नमः॥ ॐ अस्त्रायै नमः॥ ॐ अस्त्रायै नमः॥
 यै नमः॥ ॐ अस्त्रायै नमः॥ ॐ अस्त्रायै नमः॥ ॐ अस्त्रायै नमः॥ ॐ अस्त्रायै नमः॥

३ यूवायूथनमः॥

कै माहं चैथेनमः॥ टं वेभ्रुथेनमः॥ नं वा वाधेनमः॥ यं हूं द्याधेनमः॥ यं चाम
छुथेनमः॥ गं महालं चैथेनमः॥ लूं हूं द्याधेनमः॥ वूं जूं धेनमः॥ मूं यमाय
नमः॥ नूं नैमृनयनमः॥ वूं वनूधमयेनमः॥ सूं कूं वं वायनमः॥ दूं हूं धीधनायन
मः॥ जूं जूं नकायनमः॥ उूं वेभ्रुधेनमः॥ वूं वकायनमः॥ गं गकायनमः॥ दूं
दधुधेनमः॥ रूं रूं वकायनमः॥ यं याधेनमः॥ जूं जूं कुसं नमः॥ गं गदायनमः
॥ गं गृलायनमः॥ यं यकायनमः॥ यं यद्रायनमः॥ यूषीजलिने ३॥ कौमहिष
महिनेनमः॥ ॥ वलिविय॥ ॥ कौनववलिमहिषमहिनेनमः३॥ ॥ कौम

हिष महिनेनमः॥ जयध्वगुलिनयाय १०८॥ ॥ याथनायाय॥ ॥ महिषः
द्विमहामायवाम् ॥ सुमं सुमालिनि ॥ दद्यामात्रां विजयं दहि दहिनभा ॥ सुने
॥ सर्वमद्गलमद्गला निर्वसर्वाथसाधिकं स्रवचर्गवकं दविनावायनिनभा ॥ सु
नं ॥ नृपदहिय ॥ नृपदहिरुर्गर्ग वनिदहिमयूर्गो नृदि धर्नदहिसर्वा न कामान्
धदहिमं ॥ कतदावकाय ॥ ॥ थननिनयाजववलिविय ॥ ॥ नैज्वाधेनमः॥ किं
कमलासनायनमः॥ निनवासनायनमः॥ ॥ यूषीजलिने ॥ नैज्वाधेनमः॥ नैज्वाधेनमः॥
यमहावनेयवाकमायमौ हूं ३ रुद्रखाहा ॥ ३॥ ॥ कौददयायनमः॥ कौमिने

मनम॥ कौं निखाये नम॥ कौं कवचाय नम॥ कौं नगाय नम॥ क० अस्त्राय न
म॥ वलिविय ॥ ॐ कौं मनीषा नमो ॥ ३ रुद्र स्वाहा ॥ नैं कौं ३ महाविजयं च वयः
नमः ॥ नैं दं न धयष्य धयदीपाद्यवलिं गृह्ण गृह्ण ॥ नैं कौं नृकृ नृकृ नृस्वाहा ॥ ॥
खवसखा देवलि विय ॥ नैं कौं आधव न कि क मला सनाय नम॥ नैं कौं न वा सना
य नम॥ यूपी जलि न ॥ ३ ॥ नैं ॐ कौं महाकृष्ण लनी मद्रा रुति नैं कौं ३ रुद्र स्वाहा
॥ ॥ सौं हृदयाय नम॥ सी निवभ नम॥ सौं निखाये नम॥ सौं कवचाय नम
॥ सौं नगाय नम॥ स० अस्त्राय नम॥ वलिविय ॥ नैं कौं वागिरुति नैं मम ॥

नैं कृ ३ ३ मृ ३ ३ लल ३ ३ खख ३ ३ स्वादि ३ ३ वलि गृह्ण ३ ३ स्वाहा ॥ नि गूल या नि
मृदाद नय ॥ ॥ दध वलिविय ॥ कौं कृ गवा लाय वलि गृह्ण गृह्ण स्वाहा ॥ वा वट का
य वलि गृह्ण गृह्ण स्वाहा ॥ गंग दय तथा वलि गृह्ण गृह्ण स्वाहा ॥ यां या निनी या वलि गृह्ण
गृह्ण स्वाहा ॥ यी मधु ये वलि गृह्ण गृह्ण स्वाहा ॥ नैं कौं कनवी नमः सनाय वलि गृह्ण गृ
ह्ण स्वाहा ॥ सौं सौं हृं सौं शी मधु वाय वृका दनाय मद्रा रुति नैं कौं न वाय गृहीत काल दधुय मा
य गदा धनाय वा ॥ ३ ॥ सु धनी नाय रीष धनृ पि (धरी मधु वाय वलि गृह्ण गृह्ण स्वाहा
॥ ॐ ॐ ॐ ॐ ॐ यदी दं वा वलि गृह्ण गृह्ण स्वाहा ॥ ॐ ॐ ॐ निनी शरु न वाय वलि गृ

सिय ॥ ॥ सूर्यसाक्षि धाय ॥ लंखनमधुल (धल) (धन) अद्या दद्वयामनुदासु
शार्धियाय ॥ कर्तन ॥ तमिस्राजगलप्रसूता जीवयति नृनल ॥ न वन्दयन्मानन्द
सर्वसाक्षि धमीश्वर ॥ ॥ नूनिद्वितिया कूटूनिश सफमी कूटूनाधन ॥ ॥



ॐ श्रीगणेशाय नमः ॥ ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ॐ श्रीश्रीमन्ध्याय नमः ॥ ॥ अथ अः
समीकूङ्कनिभं नवमी दसमीनां ध्वनं पूजा ॥ ॥ अथ समीकूङ्कमालकाखण्डाय
दवनालिया ॥ उपक ॥ सगुन ॥ कूङ्क ॥ रुटसंवायावलिया न १ वाय ॥ धनू ॥ भा
रुनि ॥ सगुन ॥ खड्ग ॥ ध्वनं याध्ववलिर्संवलिविय ॥ ॥ मूलवलिया न ३ वाय ॥
यन्त्रया न ॥ ॥ वलिया न १ वाय ॥ कूङ्क ॥ रुटसं ॥ सयिद ॥ उपक ॥ ध्वनं याध्वव
लिर्संवलिविय ॥ ॥ नासिय ॥ न्यासयाय ॥ ॥ दवदवीधिया वनं ॥ स्मिन्नकायं
॥ ॐ यावच्चन्द्रार्कमावृता महीमग्निजलावह । नावत्सर्वविर्वाकालं वल्लभायाम् ॥

नारुव॥स्त्रि नारुवमहादविदवातामनूजाधिय।यावदक्षमियर्यकतावत्त्वंस्त्रि
त्रमाचन॥॥नायदान॥सर्वलक्ष्मीयवृद्धुर्थसर्वशक्त्यायच।गुणायचदक्षः
स्यर्कंदू।र्जदवीस्त्रि नारुव॥॥दवदवीस्त्रान॥गंगजलनं॥ॐगंगया४सविन
४।धर्षनानायाययक्षानं।यूतकृत्याययकानीस्त्रानार्थकसु।धकृतां।सादुदुनं॥
ॐ।धधीययशरुभोदिवाकविद्वज्जमिक।ययाधसत्यविर्गनेदीयस्त्रानयदीय
तां॥साधविनं॥॥ग।ध्वनायादधीयून्यसुमायतियनंश्वर्न।तद्वक्षस्त्राययामित्वमि
र्वयायक्यार्थकं॥साधलनं॥कपिलायाद्युनं।धधुमरावचयदुद्रुव।रास्कन

दवतायुर्ध्वस्तानार्थोक्त्यामिनं ॥ ॥ कस्तिनं ॥ मधुमन्तिकसंज्ञकंदवयिह्य
भादकं । यापोद्यनाम्नार्थवामधुनाम्नापयासादं ॥ ॥ साखत्रणं ॥ नानन्दनस संज्ञ
नंसर्कवागुत्खादकं । काभापरागयायुर्थननुस्तानरोक्त्यामिनं ॥ ॥ लेखनचाय ॥
जं श्रीसंवर्तमधुलान्क कमपदनहितनन्दनोक्तिमतीमासृष्टं नाथचउर्य त्वक्
लकुलगनेयश्चक श्रियषट्क । चत्वारोपश्रकोन्यपूजनविचउवस्तु रुनामधुले
नर्समृष्टं यन्नगमेनमनगुवृवर्यरेवव ४ धीकूञ्ज ४ ॥ ॥ जूलिस्तान ॥ शुद्धिनीर्थ
न ॥ सुजाकि ४ निवा मासंगत्ममित्यममूरुर्म । अद्विसिद्धियदैयुधमलिस्तानं

ददाम्यहं ॥ ॥ वनन ॥ श्रीरघुश्रुचनयूकं गन्धार्द्रं सुमनाह्वयं । आरुखनलला
तायचन्दनं युनिगृह्णतां ॥ ॥ सिद्धं ॥ वीरेश्वरी महावीरवीररुष्मि विरुषिनी ।
नेलाका कर्षनं दत्तं सिद्धं वा नृधमकनं ॥ ॥ दृष्टिं ॥ स्वर्गमर्थकया ताचतुर्दश
सुखमिक । दिव्यचक्रुलये ददृष्टिदं लोकयामिनं ॥ ॥ यजुसकारं ॥ उपवीत
मिदं सुगंभवुक्कस्य वाचुनः । गृहाधवीरजागस्य रुलं यार्कचजन्मम ॥ ॥ स्वा
ननं ॥ माल्यानिचसुगन्धनिमाल्यानि विविधनिच । मया कृतानि पुष्पाणि गृह्णतां
विदिवश्वरी ॥ ॥ चयमधि ॥ कूर्कटिका इव कूर्कटं चिन्तामणि समूहम् । मनात्मन्या

दिदधनिर्मवृत्तं युनिगृह्णतां ॥ ॥ कर्तुं यताय ॥ कर्तुं यत्नं यत्नं यत्नं यत्नं
चुनं । दिव्यान्मगुरुलाफयनं गृहाधयत्रमश्वरी ॥ ॥ यत्नयतायनं ॥ यत्नवर्तुय
ताकं यत्नं यत्नं गताम् नृपता । यत्नवर्तुलये ददं लोकयामि यत्र श्वरी ॥ ॥ अत्रुवा
ननं ॥ सुलनकलिमिश्रादूकृष्टममवर्णं रवन् । वक्रानिरुवधार्वाच्चिन्नवाजरा
यानिच ॥ ॥ यत्रुवासनं ॥ असादृशं कर्तुं यत्नमनुसिद्धिर्न जायते । अवर्णं जितमा
ननं ननु नापीनवासकं ॥ ॥ नायकालं ॥ वाजायुक्कयनं नर्मनाजयाफी रुलं यदं
गृहाधदहिमनिर्त्यं गुरुकानि वयुयुशः ॥ ॥ ॐ श्रीरामेश्वराय नमः ॥ नामि

य॥ कौं आत्मनवाय स्वाहा॥ कौं विद्यानवाय स्वाहा॥ कौं निवगवाय स्वाहा॥ ॥ सूर्यार्घ्य
 याय॥ ॐ कौं स॥ ४ मार्कण्डेय नवाय प्रकाशकिं स हिताय ॐ दमर्घ्य स्वाहा॥ ॥ न
 मिश्रा जगल यस्मिन् जीवयति रुतलं । न वक्ष्यन्मानन्दं सर्वभूतिषु मीश्वरं ॥ ॥
 आसनपूजायाय॥ कौं आधनं किं कमलासनाय नमः॥ कवलीखलालं ॥ ॐ
 सर्वविद्यान्तुसात्रयद्वैरुद्रस्वाहा॥ कवलीखलालं दमदिनस॥ ॥ हाजात्रयाव
 आय॥ खवस॥ नैगुत्रुथानमः॥ ऊवस॥ गंगधयनयनमः॥ दधुस॥ रूरीमन्ध
 व॥ ॐ दवताथानमः॥ लादाय ३॥ रुद्रधर्कदिग्धनयाय॥ ॥ गुत्रुनमस्का

तयाय वा कवायाव कस्वाननं॥ कजादाव॥ नैगुत्रुमधुलाकारं शार्फं यन
 त्रवाचनं । नत्यदं दर्शितं यननसिद्धी गुत्रुवनमः॥ ॥ दवयादावस कस्वानननं
 नैगुत्रुवनमः॥ ॥ याधमयामयाय॥ नै १६ ऊव नयाव खवनसादू
 काय॥ नै ६४ नयानय॥ नै ३२ ऊवनसापिनं॥ रुद्रगुह्मि॥ रुद्रस॥ धनधवजीवा
 त्मा आदिनभाउ नवाकस रुद्रुदवस निववनायनाथ॥ य १६ ऊवन नयाव खवनः
 सादूका॥ नै ६४ नयानय॥ य ३२ खवन नयाव ऊवननाउनं॥ नै १६ ऊवनसादूकाय॥
 लै ६४ नयानय॥ रुद्र ३२ खवननाउनं॥ सादूधकधयाव थयथयसिनं॥ याधय

तिष्ठ॥ लाङ्गाननलं ग्वउसधिसन॥ ॐ कौं कौं रुं स॥ ४ रीमसनस्य पाधसर्वेन्द्रिया
 दिङ् लाङ्गाननलं ग्वउसधिसन॥ ॐ कौं कौं रुं स॥ ४ रीमसनस्य पाधसर्वेन्द्रिया
 ॥ रीं ॐ गुह्याश्यानिम॥ ४ लास॥ रीं न ऊं नीश्यास्वाहा॥ वा वास॥ रुं मध्ममाश्यावषट्
 ॥ दधुलास॥ रीं ॐ नमिकाश्यां दू॥ ॐ गुलिलास॥ रीं कनिष्ठाश्यां वषट्॥ वा लास॥ रुं
 ४ कलनलपृष्ठाश्यां रुट्॥ कननलस॥ ॥ रीं ददयाय नम॥ ४ लं ग्वउसे॥ रीं निवभस्वा
 हा॥ मीउस॥ रुं निखाथेवषट्॥ मिलखास॥ रीं कवचाय दू॥ कवचाय॥ रीं न
 गुयावेषट्॥ मिखास॥ रुं ४ अस्माय रुट्॥ वादाय नल३॥ ॥ रीं वयूयस्मिपन

याय॥ वंशदवयाजवरवस ॥ धमगुलवायावयूजायाय॥ ॐ आधन
 ह्यादिशानम॥ ४ मीचरिखअर्घ्यामिवावमगुलस रुट् धकसेवावन॥ नम॥ ४ लंखन
 ॥ ॐ यनस्वानकं नय॥ ॐ कूशमूडाकाकायावर्तखसन॥ ॐ गुंगचयमूनयेव
 ॥ मदावलिमवस्वतिनमदिमिधुकावविजलस्मिर्त्तनिधिरुवा॥ ॐ १० जयये॥ दूः
 अवगुह्याया॥ रुट् ३॥ गालगयदिग्वन्धनयाय॥ धर्तखददवधर्मयूजाजावर्त
 हाय॥ ॐ रीमश्वनायेविद्मदवददहायधीमहि॥ तन्नावद४ यवादया॥ ॥ यूजा
 रुट् साधनयाय॥ यं १० वं १०॥ वं धनमूडाकन॥ ॥ दवायूजाधनयाय॥ वं नम

रुट ३ ॥ गालनययदिश्वं धनयाय ॥ मूलनयय्यां जलिनं ३ ॥ खर्तुंगद्युजायाय ॥
रुट्टेदयायनमः ॥ ६ ॥ मूलनययययधल ॥ चंगस्वानकं नय ॥ यानिमूदाक
नं ॥ धर्लखनधमदाय ॥ ॥ धननयय ॥ रौचन्दननमः ॥ जूकतनय ॥ रौजुद
नं नमः ॥ सिंधुनयय ॥ रौसिंदूजनमः ॥ खाननयय ॥ रौयुयनमः ॥ ॥ मूलं
रिमंश्चनशीयादूकांयुजयामि ॥ ॥ धनमाउल्युय्यां जलिनं ३ ॥ ॥ माउल्युय्यां
याय ॥ नैस्वादाशीगुनूनाथं नययामिनमः ॥ नैस्वादायनगुनू नययामिनमः ॥ नै
स्वादायनायनगुनू नययामिनमः ॥ नैस्वादायनमष्टिगुनू नययामिनमः ॥ नैस्वाः

हादिशाद्यगुनू नययामिनमः ॥ नैस्वादासिद्धाद्यगुनू नययामिनमः ॥ नैस्वादाः
मानवोद्यगुनू नययामिनमः ॥ नैस्वादायज्ञाननयनाथगुनू नययामिनमः ॥ नै
स्वादासनकाननयनाथगुनू नययामिनमः ॥ नैस्वादाकूमायाननयगुनू नययामि
नमः ॥ नैस्वादावशिष्टाननयगुनू नययामिनमः ॥ नैस्वादाकाधननयगुनू नययामि
नमः ॥ नैस्वादामकाननयगुनू नययामिनमः ॥ नैस्वादाधनाननयगुनू नययामि
नमः ॥ नैस्वादावाधननयगुनू नययामिनमः ॥ नैस्वादामवगुनू नययामिनमः
॥ ॥ सनाथिसनयययाय ॥ मूलं श्रीरिमंश्चनशीयादूकां नययामिनमः ॥ ३ ॥

दवीया॥मूर्लीडोयनिदवीशीपादुकांगर्यायामिनमः॥३॥वलिसनर्याय॥वी
 स्वाहावटुकनर्यायामिनमः॥कौस्वाहाकनर्यायामिनमः॥यास्वाहाथानिनी
 नर्यायामिनमः॥वीस्वाहाचामधुनर्यायामिनमः॥नीस्वाहाग(ह)संनर्यायामिनमः
 मः॥॥सनायिसनर्याय॥मूर्लीसांगंसायुधसिवाहनासयविवावीसानुच
 वीशीलिमंश्वरडोयनिनर्यायामिनमः॥३॥॥धनमालनिद्वय॥॥सलिसिस
 रुटलखनराय॥रुटतादं३सलिसिस॥रुटदिश्वंनयाय॥धननवीयस
 लिसिसदुनंधु॥यितालेयुधलंमनयाय॥भाहनिपूजायाय॥नैवमलवव

युनमः३॥पृष्ठांजलि॥धनस्वानकनयाव॥॥धनमालिनीयवय॥॥
 धनमालिनीयवय॥नैवयवमालिनीदवीनिर्मलमलनामिनि।रुनमकिपुष्ट
 विवद्विस्वंनजवद्वनि॥जननीसर्वरुगानांसंसाधमिनववस्मिता॥॥माना
 वीवावलीदविकावृक्षकूवृवसल।जयतिपत्रमनलनिर्वाहसंलुतनजामः
 यीनि४सृगावकवृपापनारुनमकिस्वमिद्वयाकिया।दद्विअखासुअखायून४स
 फना।गन्धवकुलुलाकावृपायुक्तनादमकिरुसंनीयम॥रामनाअतिवृ
 यास्ववृपागिवाजंरुवासाववीदीमनाख्यामिका॥विन्दूवृपावधूगाद्वयवृत्ताकृति

ॐ त्रिकां ॥ अ० ॐ म० का० व० ॐ ॥ ॐ का० व० म० या० जि० ते० क० त्व० मा० य० य० न० ॥ त्व० नू० या० र० ग० का०
 न० व० का० यि० नी० ॥ आ० दि० न० ४० का० इ० वा० आ० दि० ते० क० न० था० नि० नू० या० स्वर० नू० या० व० धी० के० ४० सम्म०
 धि० नि० ॥ नू० द० मा० ता० त० थ० न० क० ४० कि० ४० स० सु० का० रि० मु० लि० म० नी० अ० र्धा० गं० रा० न० रु० ति० सि० धि०
 भ० मि० का० र्का० ४० रु० ना० रु० ना० खा० च० म० धी० गं० शी० की० ४० म० या० मि० का० न० ग० ही० ४० क० ना० चि० ना०
 द० ह० म० दा० स० न० स० म० नि० नी० ॥ वा० द० ४० ना० मृ० ना० वि० नू० नि० न० द० स० द० रु० द० द० सु० ना० ॥ ४० य० स०
 न्मा० क० य० ना० न० द० नि० धा० नि० सी० खा० य० द० ॥ रु० न० वी० रु० न० वा० धा० नू० की० ग० न० ४० कि० ४० य० ना० मा० लि०
 नी० ॥ नू० द० मा० ला० चि० ना० नू० द० ४० कि० ४० र० व० गी० सि० द्ध० या० ॥ ग० ध० वी० सि० द्ध० मा० ना० वि० रु० ४० य० द० ना०

भी० ति० था० न्मा० र्ध० वी० ॥ वा० गि० शु० द्वा० सि० वा० सि० द्ध० ना० वा० ध० वी० मा० नू० का० सि० द्ध० मि० द्ध० कि०
 या० म० न० ला० सि० द्धि० ल० द्धी० वि० रु० ति० म० रु० ति० न० ति० ४० ४० स्वर० ना० खा० य० ना० खा० ति० ना० वा० य०
 धी० न० क० च० धु० के० ना० ल० क० धा० ॥ गी० म० नू० या० म० दा० कृ० ष० या० ग० यि० या० ॥ त्वं० अ० य० त्या० जि० ना०
 नू० द० स० भा० रु० नी० ॥ त्वं० न० वा० त्मा० न० द० व० स० या० त्म० न० या० ना० धि० न० ॥ म० रु० मा० ग० नू० नि० म० नू० रि०
 वी० न० या० ना० नू० न० क० ४० स० रु० क० ४० स्वर० स० य० स० ॥ द० ती० य० अ० मृ० ना० दि० व० या० ना० त्म० वे० ॥ व० क० ज० न्मा०
 दि० ज० न्मा० रि० ज० न्मा० च० रु० ४० य० अ० य० द्ध० य० ज० न्मा० रु० वे० र्क० ध० ना० न० ४० धु० रु० ४० रु० लु० वे० रु० य० स० ॥ म०
 य० मी० स० यि० य० ॥ म० नू० वि० द्या० मि० रि० मु० धु० क० क्काल० का० या० लि० रि० दि० व० य० ना० नू० रु० न०

मस्कात्रुं कात्रसाहासधकात्रवोषद्वसकात्रदूँ कात्ररु कात्रजातिरिचने शुभ
 कात्रवात्रात्रिचिर्वामरुसुस्त्रिने अरुसु गावली जापिरि ४ साधके ४ पूरुके मातृ रि
 मरु लदीदिने यात्रिचिर्वागिनी वृन्दमलायके नूदकी गत्रमयूयसंथागिनाथो
 गसिद्धियुध ॥ दविलंययययययने लाचने ४ स्वरुयु लुमुसय शुभ । तस्य दिवा नः
 नीक्षुस्त्रि नात्रुचवा यात्रिचि ४ सय याताल सख्यवी सिद्धि नद्यादतावरुने ॥ रुकि
 नाय ४ य १० दधु कं एक कालं द्वि कालं त्रि कालं सवि ४ संस नद्य ४ सदा मानव ४ सा पि
 नस्त्रानित्री वाधुव यवना यपिसंन कस ॥ दविपूशानूना गन्महालक्ष्मी यददम

श्री नारायणानुगकाश्रवपद्ममध्यामहायाषदृष्टा विमू अति । संसृयदविलदी
 यमखुपूध्वचुदानुकारं रुत्रदिवा माविषुसत्तु लो लुष्टगुरु ली । यपिवः
 द्वाष्टु टवधनेनागया । गुरुजावद्वयादा नलेसु चित्तनामसंकी रूताष्टविमू अति
 धात्रे मरुवाधिरि ४ स्मृत्ययादा नविन्दद्वयनं माहाकालिकालान्तिन ऊयुरं । स्क
 द । गविन्दवधुचवुर्वाक्ययायुधे मालिमालालसत्यद्रकि अल्लसत्यि अत्रम
 व्वदी वामिकेशे नवी रें नवसे नवधु गनादं कसखायवाधं कसखायवाधं निव
 ॥ ॥ ॐ ति श्रीमालिनी मीरुसमाय ४ ॥ वलिपूजा ॥ वावदकायनम ४ ॥ द्वादि

गुवालाय नमः॥ यांथा निशे नमः॥ वां वाम धुये नमः॥ गर्भ गधनाथाय नमः॥
॥ चं न स्या न कं न यृजायाय ॥ ॥ वलिविय ॥ नष वलि ४ वां वट्ट काय नमः॥ न
ष वलि ४ कां थ गुवा लाय नमः॥ नष वलि ४ यांथा निशे नमः॥ नष वलि ४ वां
वाम धुये नमः॥ नष वलि ४ गर्भ गधनाथाय नमः॥ ॥ या धायाम न्यास याय ॥
देव या आस न यृजायाय ॥ नै आध न ग क थ नमः॥ नै नून कास नाय नमः॥ नै
स्की दाय नमः॥ नै अं कू लाय नमः॥ नै ना बाय नमः॥ नै य द्वाय नमः॥ नै य गाय
नमः॥ नै कं ग लाय नमः॥ नै कं र्दु काय नमः॥ नै न क य द्वास नाय नमः॥ ६

त्वत्स्वयमेव समास्त्रयाद्याद्येयं ॥ क्षतयूष्यं नमः ॥

१५॥ नमस्यायव कामि सर्व नरुषू गमपिर्न

ॐ ॥ ८८ ॥ म न य त म न य न म ॥ ॥ ध्या न ॥ आ वा रु न ॥ रु ग व न्नी म म न म
न कि ॐ ॥ ग न २ ॐ ॥ रु नि २ ॐ ॥ रु म नि दि ता रु व २ ॐ ॥ रु म नि वृ द्वा रु व २ म म य
ज गृ हा ॥ ॥ अ र्घ्य नि पा द्य त ॥ र्ग ॥ न त्वा र्घ्य म ग क थ री म श्व वा य न म ॥ ॥ र्ग
न त ॥ र्ग ॥ न व र्घ ४ म ग क थ री म श्व वा य स्वा हा ॥ अ र्घ्य नि आ य म न त ॥ र्ग ॐ ॥ द मा
य म नी र्थ म ग क थ री म श्व वा य वी ॥ र्ग ॐ ॥ द स्त्रा न म ग क थ री म
श्व वा य न म ॥ ॥ व क च न्द न त ॥ र्ग ॐ ॥ द म नु य न न क च न्द न म ग क थ री म श्व
वा य न म ॥ ॥ य न त ॥ र्ग ॥ न व ग न्ध ४ म ग क थ री म श्व वा य न म ॥ ॥ सि द्ध व त ॥ र्ग ॐ

विमलीनिर्गन्धद्वयं विभुजं च नन्द

२ नंखयानखनहाय॥ वनखानैयूजायाय॥

१ श्रीमद्वेनाय

दं सिद्ध वसन्त कथरी भस्वनाय नमः ॥ स्नानं ॥ श्री नवायुष्य माला सप्तक थै व
 षट् ॥ धूपनं ॥ गंध पूजा याय ॥ श्री खयार्चन हाय ॥ चैतनं ॥ स्नानं ॥ कर्तन
 छै भै धनि मकु मात ॥ स्नानं ॥ दलपान गंध थय व धूप याय ॥ श्री सप्तक थरी भ
 भस्वनाय धूप निवेदयामि ॥ दीपनं ॥ श्री खयार्चन हाय ॥ चैतनं पूजा याय ॥ श्री स
 षक थरी भस्वनाय दीप निवेदयामि ॥ ॥ दक्षया द्धुत नलिका धया व नै व द्धुनं ॥
 ॥ धन याय ॥ लेखन हाय ॥ जप त्रय ॥ यं १० नं १० वं १० धनू मूडा कर्तन ॥ जप त्रय ॥ न
 क्षै स ४ यत्र मां मृत नृपाय नमः ॥ धूल १० ॥ पूजा ॥ नमः ॥ द्धुय ॥ श्री ॐ नै व द्धु सप्त

य३

कथं श्रीमन्वायनिवदयामि॥समानं॥रौ॥नानिरुल्लसुल्लानिसनककथं श्रीमन्वाः
नायनिवदयामि॥मा॥ध॥रौ॥द्विपकानसनककथं श्रीमन्वायनिवदयामि॥आ
वसननं॥रौ॥यूनवायमनीर्यसनककथं श्रीमन्वावौ॥यतस्वानकं॥युष्मज्जलिगं
३॥दवदवीर्यं॥तर्पययाय॥मूलस्वादाशीरौमन्वावशीयादूकांनर्पयामिनमः४
॥३॥मूलस्वादाशीदीपदीदवीशीयादूकांनर्पयामिनमः४॥३॥यनिवात्रयूजाया
य॥रौ॥द्विपकानसनमः४॥रौ॥निवात्रमनमः४॥रौ॥निवात्रमनमः४॥रौ॥कववायनमः४॥रौ॥न
वायनमः४॥रौ॥अक्रायनमः४॥रौ॥निर्गयूजा॥रौ॥युधिष्ठिरमूर्कथनमः४॥रौ॥अद्व

नमस्कृत्य नमः॥ कौं कौं दूँ ली ममृक्त्य नमः॥ दाँ दौं दुँ द्रु प दी द वोनमः॥ ऊँ न कू
लमृक्त्य नमः॥ काँ सरु द वेमृक्त्य नमः॥ वूँ वन पा ला य नमः॥ धूँ ध्रु वि का य नमः
॥ कौँ कौँ कुँ को मा वा यु नमः॥ कौँ कौँ निमृक्त्य नमः॥ ॥ धूँ धर्ममृक्त्य नमः॥
॥ ॥ पुष्पां जलितां ३॥ उँ ली म श्व ना य वि द्म ह व द्वा द द्वा य धी म हि । तन्ना नू द ४ य
त्रा द या ७॥ ॥ यू जा ॥ ऊँ श्री गुरु तां ग रु ने वा य नमः॥ ॐ ह्रीं नू नू रु ने वा य न
मः॥ डँ डँ चू रु ने वा य नमः॥ भौं भूँ कार रु ने वा य नमः॥ ऐँ हुँ उ न्म रु ने वा
य नमः॥ नैँ नैँ कया ल रु ने वा य नमः॥ औँ औँ री ष क्ष रु ने वा य नमः॥ जूँ जूँ ४॥

मं हा न रु त्र वा य न म ॥ अं व द्वा ष्ठे न म ॥ कं मा रु श्व ये न म ॥ चं को मा र्थे न
म ॥ टं वे लु वी न म ॥ नैं वा नो ष्ठे न म ॥ पैं ॐ द्वा ष्ठे न म ॥ रैं चाम ॐ ये न म ॥
अं महा लक्ष्मी न म ॥ नैं ज या दि शान म ॥ अं अं त्र द व ॐ दि शान म ॥ अं अं स
या ग्म दि शान म ॥ लूं ॐ द्वा य न म ॥ नूं अग्ने ये न म ॥ मूं य मा ये न म ॥ नूं नैः
स त्र ये न म ॥ वूं व नू ध ये न म ॥ रूं वा ये वें न म ॥ सूं कू वे न ये न म ॥ दूं ॐ
ध ना ये न म ॥ अं अ ध म न म ॥ उं उ द्वा ये न म ॥ नैं अं अं अ व न्ने रें व व रें
व वी शान म ॥ ॥ न न ४ य या ग्म दि पू ज ॥ ॥ नैं अं अं य या ग्म द्वा धि य त य अ

[illegible]

महालक्ष्मीं सकृदिति नमः श्रीकाष्ठं दत्तं धनं नमः ॥ धनं योज ॥ ॥ मदि
 यमदनीयान्यामयाय ॥ ॥ वतनलाहोतसवृयमदिवसं यदि निद्रं रुट् जम्भा
 यरुट् ॥ मदिवदिं सिकं दूं रुट् जूं गुष्ठायां नमः ॥ मदिवदं गोष्ठां विद्रूं रुट्
 नूं निर्यां स्वाहा ॥ मदिवदिं जयदिं जयद्रूं रुट् मधुमायां वषट् ॥ मदिवदं न
 रुनञ्जनामिकायां दूं ॥ मदिवसं यदि निद्रं रुट् केनिष्ठायां वीषट् ॥ मदिवसं यदि
 निद्रं रुट् कवतलयुष्ठायां रुट् ॥ ॥ मदिवदिं सिकं दूं रुट् ददयाय नमः ॥
 मदिवदं गोष्ठां विद्रूं रुट् निवसे स्वाहा ॥ मदिवदिं जयदिं जयद्रूं रुट् निरवाः

येवषट्॥महिषंरुनरुनकवचायद्रुं॥महिषसूदिनिद्रुंरुनरुनयायवो
षट्॥महिषसूदिनिद्रुंरुनरुनयायद्रुं॥॥यी०यूजायायकलंसस॥॥ॐ
यनेनुनूथानमः॥ॐमनेमनुनूथानमः॥ॐयनायेननुनूथानमः॥ॐयन
महिषनुनूथानमः॥ॐअध्वानकथनमः॥ॐकृमायनमः॥ॐअननू
यनमः॥ॐवनादायनमः॥ॐयुधिष्ठिरनमः॥ॐकीलसमदायनमः॥ॐ
ध्वनदीपायनमः॥ॐमहिमधुपायनमः॥ॐकल्यननमः॥ॐमनिवदि
कार्यनमः॥ॐवत्तसिदासनायनमः॥ॐधर्मायनमः॥ॐकृतायनमः॥ॐ

वेनाकूयनमः॥ॐनेध्यायनमः॥ॐअधर्मायनमः॥ॐअकृतायनमः॥
॥ॐअवेनाकूनायनमः॥ॐअनेध्यायनमः॥ॐअननूकायनमः॥ॐय
दायनमः॥ॐसूर्यामधुलायदादकलात्मनेनमः॥ॐॐमाममधुला
यथाउकलात्मनेनमः॥ॐमवद्विमधुलायदकलात्मनेनमः॥सैम
त्वायनमः॥नवजसंनमः॥नमसंनमः॥अंआत्मनेनमः॥अंअकृता
त्मनेनमः॥ययवमात्मनेनमः॥क्रीकृतात्मनेनमः॥अंयरायेनमः॥ॐ
मायायेनमः॥ॐजयायेनमः॥ॐसूर्यायनमः॥ॐविष्णुदायेनमः॥ॐन

ॐ वद विष्णवे नमः ॥ धृय न ॥ नव धृय दौ दग्नी ये नमः ॥ दीय न ॥
ॐ मदीय दौ दग्नी ये नमः ॥ नैवेद्य न ॥ ॐ दनेव दौ दग्नी ये नमः ॥ अ
ल न ॥ मिदं तां वृत्ति दौ दग्नी ये नमः ॥ खड्ग न य जायाय ॥ महिष दि सि क द
रु द द या य नमः ॥ महिष न गो धा वि दू रु द मि न भ स्वा रु ॥ महिष दि नी य दि
न य दू रु द मि खा ये वषट ॥ महिषं न रु न क व चा य दू ॥ महिष सु दि नि दू रु
ट नै न यो य वीषट ॥ महिष सु दि नि दू रु द अ मा य रु ट ॥ ॐ दग्नी ये नमः ॥
ॐ वने ये नमः ॥ ॐ आ या ये नमः ॥ मृ क न क य रा ये नमः ॥ ॐ कृ ति का ये नमः

॥ नै अर य य दा ये नमः ॥ ॐ क वा का ये नमः ॥ अ ४ स्व नृ पा य नमः ॥ च च का
य नमः ॥ च र्वा य नमः ॥ ल र व द्वा य नमः ॥ व र्वा ट का य नमः ॥ र्वा ना य न
मः ॥ र्वा नू य नमः ॥ र्वा ला य नमः ॥ र्वा नू ये नमः ॥ अ व द्वा ये नमः
॥ क मा रु ध ये नमः ॥ च को मा ये नमः ॥ ट वे ष्ठ ये नमः ॥ र्वा वा ष्ठ ये नमः
॥ य ॐ द्या ये नमः ॥ य चामु ये नमः ॥ र्वा म दाल ये नमः ॥ र्वा ॐ द्या य नमः
॥ र्वा य नमः ॥ र्वा मा य नमः ॥ र्वा नै म य नमः ॥ र्वा व नू ये नमः ॥ र्वा
क व वा य नमः ॥ र्वा ॐ र्वा ना य नमः ॥ र्वा अ का य नमः ॥ ॐ व द्वा ये नमः ॥

वैवहायनमः॥ गङ्गायनमः॥ द्वादशायनमः॥ रव्यहायनमः॥ र्यया
यनमः॥ अङ्गुलीयनमः॥ गङ्गायनमः॥ गङ्गायनमः॥ चक्रायनमः
॥ र्ययायनमः॥ ॥ यथाजलिनेय ॥ ३ ॥ कौमहिसमदिनेनमः॥ ॥ वलिवि
य ॥ कौमुषवलिसमदिनेनमः॥ ३ ॥ ॥ जयध्वगुलिनयाय ॥ कौम
हिसमदिनेनमः॥ १०८ ॥ ॥ पाथनायाय ॥ महिषधिम कामाथनाम ॥ ६
मूढुमालिनी ॥ द्वादशमाना अविजयदहिनमा ॥ ६ ॥ सर्वमङ्गलमर्ग
ल्यगिर्वसर्वाथसाधिकं सवन्यवर्गवर्गदविनावायनिनमा ॥ ६ ॥ नूर्य

दहिय ॥ दहिरुगंगवनिदहिसमयुगा न्दहिनं दहिसर्वनिकामान् दहिस
म ॥ कनकावजाय ॥ ॥ जवसवा दवलिविया ॥ नैआधन ॥ कि केमलासेनाय
नमः॥ नैनासनायनमः॥ ॥ यथाजलिने ॥ नैकौटु नैधनायमहाववयवा
कामायमौ दू दू दू रुट्खाहा ॥ ३ ॥ कौटुदयायनमः॥ कौटुवसनमः॥ दू
जिखायनमः॥ कौ कवेवायनमः॥ कौ नैगायनमः॥ ४ ॥ अङ्गुलीयनमः॥
॥ वलिविय ॥ ॥ कौमधूमती ॥ नैकौटु नैधनायमहाववयवा
पत्रमरु नैय ॥ दगधयूयधूयदीयाद्यवलिगृह ॥ २ ॥ नैकौटु नैधनायमहाववयवा
रववसवा दवलिविय ॥ ॥ नैकौटु नैधनायमहाववयवा

वलिविय ॥ ॐ दं न वं दं वलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ॥ ॥ विद्यावनायुजा ॥ नैधनुद न
यय न मे न मा न धय न म ॥ ३ ॥ ॥ वलिविय ॥ ॐ दं न वं दं वलिं गृह्ण गृह्ण स्वा
हा ॥ ॥ उपकयुजा ॥ ॐ अग्नेऽस्माय न म ॥ ३ ॥ वलिविय ॥ ॐ दं न वं दं वलिं गृ
ह्ण गृह्ण स्वाहा ॥ ॥ सवधयुजा ॥ ॐ अश्वत्थामे न म ॥ ३ ॥ ॐ वनेय न म ॥ ३ ॥ ॐ वासा
य न म ॥ ३ ॥ ॐ रुनुम न म ॥ ३ ॥ ॐ रीरीखनाय न म ॥ ३ ॥ ॐ कृपाय न म ॥ ३ ॥ ॐ यवधुना
माय न म ॥ ३ ॥ ॐ मार्कण्डेयाय न म ॥ ३ ॥ ॥ वलिविय ॥ ॐ दं न वं दं वलिं गृह्ण गृह्ण स्वा
हा ॥ ॥ भारुनियुजा ॥ नैवमलव न य न म ॥ ३ ॥ वलि ॐ दं न वं दं वलिं गृह्ण गृह्ण स्वा

स्वाहा ॥ ॥ कुरुयुजा ॥ नैवमलव न य न म ॥ ३ ॥ ॐ आध्वन धाकि कमलासनाय न म ॥ ३ ॥ ॐ
नैवमलव न य न म ॥ ३ ॥ ॐ वीरुहानकाय धीया दुर्कायुज्यामि ॥ ३ ॥ ॐ वद न य न म ॥ ३ ॥ ॐ
दयाय न म ॥ ३ ॥ ॐ विनयस स्वाहा ॥ ॐ विखाय वषट् ॥ ॐ कवचाय न म ॥ ३ ॥ ॐ नरा
य न म ॥ ३ ॥ ॐ अस्माय न म ॥ ३ ॥ ॥ वलिविय ॥ ॐ दं न वं दं वलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ॥ ॥ या
निमृदाक न ॥ ॥ रुक्मयुजा ॥ नैवमलव न य न म ॥ ३ ॥ ॐ दं न वं दं वलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ॥ ॥ या
ॐ दं न वं दं वलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ॥ ॥ कोमानीयुजा ॥ नमि ॥ कोमानीयान्या
सयाय ॥ ॐ अस्माय रुट् ॥ ॐ अगुष्टाय न म ॥ ३ ॥ ॐ नीर्या स्वाहा ॥ ॐ मध्वमा

शीवषट् ॥ कौं ननामिकाशीर्द्र ॥ कौं कनिष्ठाशीवोषट् ॥ क४ कवनत्रयुष्ठाशीरुट् ॥
 नादाय ३ ॥ कौं ददयाय नमः ॥ कौं नित्रमस्वाहा ॥ कौं निखायेवषट् ॥ कौं कवेवा
 यद्रु ॥ कौं ननुरयायवोषट् ॥ क४ अस्माय रुट् ॥ नादाय ३ ॥ आबोहन ॥ चं
 कोमाविः ॥ हा मच्छ ॥ हा गच्छे स्वाहा ॥ आसनये जा ॥ नैमयुना सनायशीयादुका
 पूजयामि ॥ नृत्याद्यैर्वै कोमार्थे नमः ॥ ॐ दमर्द्यैर्वै कोमार्थे नमः ॥ ॐ दमाचमनी
 यैर्वै कोमार्थे नमः ॥ ॐ दस्नानैर्वै कोमार्थे नमः ॥ चरुत ॥ नखगंधैर्वै कोमार्थे
 नमः ॥ तक्रचन्दनैः ॥ अन्नपानैः ॥ ॐ दमनूपनैर्वै कोमार्थे नमः ॥ सिद्धवतः ॥

३ अर्घ्यानपादनैः

पूषतः १

ॐ दसिद्धवैर्वै कोमार्थे नमः ॥ ॐ दपूष्यैर्वै कोमार्थे नमः ॥ धूपतः ॥ नृषधूपवै
 कोमार्थे नमः ॥ दीपतः ॥ ॐ मदीपवैर्वै कोमार्थे नमः ॥ नैवेद्यतः ॥ ॐ दनैवेद्यैर्वै
 कोमार्थे नमः ॥ शृङ्गत्रिं ३ ॥ नैवेद्यान्नं अमाद्यवन्नदविमलैर्वै श्रीकोमावीविश्व
 श्रीयादुकापूजयामि ॥ वलिविय ॥ नैवेद्यवलि ४ श्रीकोमार्थे नमः ॥ ३ ॥ ॥ जय ॥
 ॥ १० ॥ स्नानं ॥ मरुमयुवमावृता कालङ्कगुनिवासिनी ॥ सर्वसिद्धियददविः
 श्रीकोमावीचनमास्तु ॥ अन्नगंधादि ॥ कस्नानगन्धजाय ॥ ॥ दधूवलिवि
 य ॥ कौं दगुयालायवलिगृह्णगृह्ण स्वाहा ॥ वैवट् कायवलिगृह्णगृह्ण स्वाहा ॥

गंगाय नमः वलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ॥ यं या निनी आवलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ॥ यं चाम
धुयै वलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ॥ नैं दैं कनवी नमः नय वलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ॥ रौं रौं रैं
गौं रौं मध्व नाय वृकाद नाय मरु रौं न वाय गुर्वी न काल द (धुय माय गदा धवा
धुय द्या धुय नी नाय सीष धवृपि (धरी मध्व नाय वलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ॥ दैं दैं दैं
दीय दी दूं वलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ॥ ॐ ॐ ॐ निनी मध्व रौं न वाय वलिं गृह्ण गृह्ण
स्वाहा ॥ ॐ वमः धा द्यु मारु नमः य वलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ॥ ॐ दैं दैं दैं ॐ मी पृथु
य दीय अलि वलि मरु याय (धाय नी नैं गृह्ण गृह्ण उरु उरु मरु मरु लल लल ल

ख ख ख ख खादि खादि मरु गाम लाधिय नथ वृकाद नाय की चक कृन्मालि (ध
वलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा ॥ ॐ दैं दैं दैं दैं नी लं जी मू न सी का धी धा न द द्यारु या वरुं उ
द कं रं वन का दं कं गुया ल वृकाद नं सर्व विष्णु विना नमः न न न न गुया लाय दैं दैं
दूं वृथै ध्व न आ रू उ वं ध्व न आ रू अ व न व अ व न व वलिं गृह्ण गृह्ण कम ध्व व न
धाम म स्वाहा ॥ धमूल वलि ॥ ॥ हवया (धं धूप दीय न वं द्यमा (धं ध्व य म्वा न
द काय दार्थ धन द्याय ॥ लं ख न आ च मन रं ॥ ॥ ऊय याय मूल न १०८ ॥ ॥
का ग या य रु का ॥ ॥ ॐ नमो धी रौ मध्व न मरु रौ न वाय ॥ दं रौ वि ४ य निय

कदाचुदावभाइ ४५ सना नुस्त्रीरु यस्य च नम न्द न क न रु नि का दं व नी
पायिनी नित्यं न व न ज न ज द धि क ४५ द धु का नु द य र ड र ती ष ष मा
च न क म नि र्गं श्री म म न रं ॥ क न न ज नि रु या न डो य शान न च का न कं
मा र्जी ना रु य जि र्मी म व न्द रं य व ना त्त र्ज ॥ अ स्म ति ल्य क र्म वि धि न त्त र्ज वि
धि ४ य वि यु र्धु म रु ॥ क र्ग द व अ य ॥ ॥ व लि दान न्का ग भ दि मा ल ना स थ न ॥
अ थ य धु यो क र्ग ॥ ॥ यो य यू ज या य ॥ ल र व न म ल रं न सिं धु न न च कं स्वा न
न यू ज या य ॥ नं कालि कालि वे र्ग श्व नि ला रु द धु य न म ४ ॥ नं वा गी श्व य नि

म ४ ॥ नं ल न्नी ना वा य धं य न म ४ ॥ नं ड मा म रु श्व ना य न म ४ ॥ नं व द्म वि षू
नि व श कि यू का य न म ४ ॥ ॥ ख द्मा य ख ल ना धं य श कि का या यि न त्प न ४
य धु र्क य त्वा गी र्ध र व द्म ना थ न मा रु न ॥ ॥ च न स या उ ति ना हा त सि च क
॥ ५ ४ अ स्मा य रु ट ल र व न रु य ॥ क र्ग न न च न त सिं धु न न च कं स्वा न त च्च कं
५ ४ अ स्मा य रु ट भा उ श थि या व न ॥ दू अ व यु र्धु या य ॥ वं ध न म ड क र्ग न ॥ य
न म श्व नु रा व यो व भा उ श थ न स्वा न अ क र न यू ज या य ॥ ॥ दू द द या य
न म ४ ॥ दू नि व म स्वा हा ॥ दू नि र्वा य व ष ट् ॥ दू क व वा य दू ॥ दू नं रु य

यवोषट् ॥ ५४ ॥ अङ्गाय रुद्र ॥ ॥ मूलं द्वागवलयेनमः ॥ चत्रसयाद्रुसयाः
नजीकावकवलखन ॥ ॥ यत्रय ॥ येषु पाभयविद्म हविश्वकर्म (अधीम
हिनं नाजीव ४ यचादया ७ ॥ धकलखचत्रसयाभाउसर्क ॥ ॥ संकल्ययाय
कलखचत्रसयाभाउ ॥ लायकन ॥ ॥ अङ्गा ॥ श्री श्री श्री रीमश्चत्रजिवन
किरुद्राचकाय द्वागयर्गु उरुमर्दघानयिषा ॥ दवयाकनन ॥ ॥ पूर्वजन्म
कृता त्यायात्य शुजन्मनिजायन ॥ सर्वपापविनिर्मकं शिवलाकं सगच्छ
तु ॥ ॥ मूलायकं स्यायकन द्वाय ॥ लखलायक ॥ मन्त्रविय ॥ वाकनच्छा

य ॥ स्मारायत्रय ॥ (अभयदक्षिष्मन ॥ ॥ नर्यदयाय ॥ नन्दकु कुलथागिना
नन्दकु कुलरु नवा ४ ॥ नन्दकु श्री कुलाचार्याथिना कुलयालका ४ ॥ दहिन ४
सखिन ४ ॥ सुखिन ४ ॥ सुखिन ४ ॥ सुखिन ४ ॥ यदालसदा ४ ॥ अत्रिचर्गजीवध्वनिदी ॥
मूलमन्त्र द्वागयर्गु लनर्यदयाय ॥ ॥ लखयालखनथमलाय ॥ चनसिधन
नय ॥ ॥ दवयाकं कस्वानन ॥ रुगवनरुमीमसेनमरु नवयथा गकि
यूजिना रुद्रमस्वयसादोरुवनमस्कावेयाय ॥ ॥ वलिसकनन ॥ ३ ॥ ॐ
वेषुश्चत्रायनमः ॥ कजीकावपागुसधुदावधकं पियावस्वयालवल्लि

सकनन॥ वलि (अप) सूर्यसाक्षि थाप्रा॥ ॥ ॐ तिहीमसंनदजास
माफ॥ ॥

ॐ नमो ग (अ) ॥ ॥ पतिवाहलप्रतिष्ठा॥ रुतसाप्ररूपाप्रा॥ प्रथ
कर्म ॥ ॥ (अ) धनप्राप॥ स्नानपातुके ॥ ॐ अद्यस्वगवनाहति॥ ॐ
प्रादि॥ गं गमप्रा ॐ लादि॥ मलमकुंदा॥ धनपतिवाहलसदृष्टिके
कमिष्टिप्रादावे॥ नं ॐ मकुंदा॥ पतिवाहलकापगनधास्ये ॥
चन्दनादिसगुहासदृशानिप्रतिष्ठाप्रा॥ धास्यं ग्याकापगदासा

पतिवाहलप्रमाननकावलसातावप्रनाथप्रसर्ग॥ धपादु
बनमातकावाप॥ ॥ नासिपा॥ ३॥ ॐ अद्यादि॥ प्रमानस्य अमुकद
वताप्रापिकाप्रतिष्ठाजननिमित्तार्थ॥ गुननमस्कारादिरुत ॐ ह्यात्मा
पूजाक॥ मातिनीधाने॥ धनं लिदगकर्ममातकाप्राप॥ ॥ धनं
तिपंचसूक्तान ॐ दाडाजीर्वन्यासा॥ ॥ गिगवन (अ) धनी॥ दुवा
सननिगा॥ नं ॐ नं ननुनापया ॐ पू॥ नं ॐ नं ननुनापया ॐ पू॥ नं ॐ
मं ॐ नं ननुनापया ॐ पू॥ नं ॐ नं ननुनापया ॐ पू॥ नं ॐ नं ननुनापया ॐ पू॥

मधमः मधमि चन्द्रायाः पतिस्तथा दवा ताः दूपा विडं स्यात्ता शक्ति
ः श्री वाक्यं (ए) विनि प्रोगः ॥ ७ ॥ श्री कौ प्री प्रेतं लं वं शर्व संह लं केः दंसः
क्षो अम कस्य या एमः सर्व नि प्रो नि ०० हा गय सूर्य चि तं तिष्ठ न्नु स्या
हा ॥ नृ ५ ह ५ स ५ ॥ १०८ ॥ अथा त व डे व ती श्री ॥ पुन देव या वि
(म) व मूल म न न ॥ १०८ ॥ ॥ श्री कलि रु न ॥ नृ ५ प्रो ५ द हि त थ
श्री वं शय द हि त गं धन वि द्या स्नान सूर्य द हि द हि म ल य स्या
वर्ग ॥ म रे श्री त नि यति स्त श्री कृति वि प्र ॥ माल स स्ति त हा ली ॥

प्रति लि त ३ ॥ व जं ग न य द्वा ज्ञा य स्का गु र ति प्राप्ता ॥ ०० ति श्री व
न्या स ॥ ॥ पुन देव पति वा हा त य द्वा अम क दे व तो प्रा वि (म
ष) ए पति प्रा ति (थं) इ ल ॥ क म्मा च न प्रा प्ता ~~॥ ०० ति श्री व~~
प ग्नु ग यी ए प्रा प्ता ॥ को मा नी बू ज्ञा वी क न चा प्ता ॥ उा ग
व न क द ॥ पा न दान प्रा प्ता ॥ दे व द्वा प द कि ए म चा प्ता ॥ अ
चा प्ता य द्वा द कि ए म वि प्र ॥ अ रि ष क च न्द न सि व ध न
स गु ए म हि नि ति प्रा ॥ प्र सा द वि प्र माल की ॥ स्वान की का प्ता

असकलसर्वविद्या। न्यासलिना। बालि (५५) प्राप्ता। रूपैसा। धि ५५॥
 शश कलकान्तं॥ ॐ निसिं कृपयति वाहाप्रतिष्ठा विविधस
 मा फा॥ ॥ ४५॥ रूपाणां सम्बन्ध २४० का मुदि १४ मोर॥
 विमला तन्म॥ ॐ त्रिवेद न उ तं तं म्र पावया विवेक दि स॥ न गच्छ
 पितादवी पद मूल प्र ४ ४५॥ यद्व प्र ल ख पि त्वा तु नाना ५५ तु स्व
 रूप के सुख पि त्वा स्माप पि त्वा तस्य पु ४५ रु लं ४५॥ स साग न
 महोदान स (४५) लवन कानन॥ गत् रु लं ल र न नि ल्यं पद मूलि

सिख ॥ ४५॥ काटि लिंग प्र ति स्माप पत् रु लं समुदाहृतं गत् रु
 लं ल र न नूनी पद मूलि प्र ल र व नाना॥ ॥ प्रति वाहा ल दा
 न वा क्य॥ ॥ सम्बन्ध २४२ अथि क शो वि न श्रु दि १० रो प थु क
 कृपति वाहा ल दा न वा क्य श्री विमला नन्द स क लं चो पा प्र ति स्मा
 दि चो पा श ल मु र रु पा न् ॥ ७ ॥ ३ ॥ ५५ ॥ गु ने वी नमः॥ ॥





I

2170

Wells

2

I

2170

1810

[illegible]

अथा नास्तु सत्तु न अर्थपा
उपज्ञनी॥ सोद दयादिष
उक्तं ॥ आवाहनादि यो
निराका॥ हे उक्ता मपर
आ॥ सुं कुं सुं अिखा
सव्व सुं सुं सुं देहेन
वादमिति अत्ता॥ ॥

नमो ह वै लिख्यमानं ॥ ३५ ॥
गन्तव्यं यवलिं गच्छेत्स्वा
रा ॥ क्रौञ्चं पाशाया ॥ हे हि
खास्यकृत्स्नं नवाय ॥ हे
संखलिं गच्छ ॥ ३६ ॥ यथा
दानदीपाङ्गनामं कुलव
लिं ॥ हे कुकादिगन्तव्यं ॥
ब्र ॥ ब्रह्माध्यादिगन्तव्यं ॥
हे सर्वविघ्नकृत्स्नः सर्वह
र ॥ हे यन्निजगन्तव्यं
नायकगन्तव्यं विस्मिताः
॥ पानालोसंस्क्रिताश्च
नेष्टुं नुं संवलिं ॥
आवाहनादिधूपदीप
प्रस्तुत ॥ हस्तपुत्राः पि
३५ वागन्तव्यं वदका
माह कायाभिलाषिः

वृष्णाः स्यान्नात्र सिध्य सकल
 पत्रिक लोहितश्च द्यव्यधना
 गमः ॥ ७७ ॥ यज्ञः
 ऊर्ध्वगच्छाः पवनसुग
 ॥ ७८ ॥ कपालागलाः
 स्यान्नाद्यः समसिः सहव
 लिवि विषय्यो नु अभिनि
 नु निर्या ॥ ७९ ॥ वध्योर्ध्वन
 विध्यो न स्वर्धपत्रिपु
 मसुः ॥ ८० ॥ न्यासाभु
 न्यवलि विसर्ज्य नं ॥ ८१ ॥ क
 याचा वलिसक्कास्य पर
 ह्मिष्ठायाकावधमनस
 वाचक ॥ ८२ ॥ नितिरव
 लि विधमनी ॥ ८३ ॥

अथ यद्रहमिधमनी ॥ ८४ ॥
 किनि रविश्चकादनायकः
 अस्मादह ॥ ८५ ॥ अह
 धाअधाने अधानाम्
 रवीध्वं वचायद ॥ ८६ ॥ अन
 गा रनी ॥ ८७ ॥ अधाने अधाने

धानाम् रवी वद नपा री
 कवचायद ॥ ८८ ॥ अवग
 द्वापाप ॥ ८९ ॥ अनपा
 लावन ॥ ९० ॥ नितिरमिधम
 नी ॥ ९१ ॥ धनपर्वजग
 धमधन ॥ ९२ ॥ नमस्का
 न्यासाद्यपाप ॥ ९३ ॥
 पूर्वादि कुमलपुत्र ॥ ९४ ॥
 पूर्वदिधि ॥ ९५ ॥ पूर्वदि
 कायि पूर्ववक्त्राय ॥ ९६ ॥
 द्वापनं ॥ ९७ ॥ द्वापनं
 दिधवध्यादि कुमलपुत्राय
 पाप ॥ ९८ ॥ उरुनमस्य ॥ ९९ ॥
 अधाने अधाने नपा री
 ध्या उरुनवक्त्राय पाप ॥ १०० ॥
 पञ्चमिधमस्य ॥ १०१ ॥
 मरुता निष्कायि ध्या पञ्च
 मवक्त्राय पाप ॥ १०२ ॥
 नं ॥ किनि रविश्चकादनाय
 ये ध्या पनापनवक्त्राय पा
 प ॥ १०३ ॥ अनपाप ॥ १०४ ॥
 ध्या पापनमः ॥ १०५ ॥
 नकुमलसमनेधन

मधुसूदन ॥ वा ला व ग म
 यती न क र प ॥ ॥ कुं डि
 ला ना ध म य वि द म हि र क
 ना य ध म हि र न म न द ॥ पु
 री द या ० ॥ अ न ग ॥ ॥
 स ला यि न क पा प य प वि ग
 न स ॥ च न द न सि न न प स
 न प र न ॥ व नी णि ष र
 न प र नी ॥ उ र हे र स र
 अ लि प यं पा प ॥ ३ ॥ क प
 कृ त ॥ ॥ नि म लो क य
 रे पा व ल रू न प्र व र्ति न
 उ क्रा न पा प प ॥ अ न
 म स र व न र पि ह ॥ प
 ग य र्ध न वि वि प नि प र्ध
 म म ॥ पं च ग य त्रि ला ग
 क न य ० ॥ द न रि न य र
 मा न य र्ति ॥ ॥

न ना दि य रू प वी न द ॥
 व स प र्थी न ल र्की ॥ ॥
 उ र हे र रू स द णि ग य
 न म ॥ ३ ॥ स र म न दि
 प र न ॥ ॥ अ प दी प र य
 म र्ति ॥ उ म म य लि ग म
 य स र्व पा प र न य च ॥ स
 र्द र प वि ग य न च न
 पा य न न म ॥ उ म म य
 लि ग म र्ध न वि वि प नि प
 र्ध म म ॥ ॥
 पं च ग य रू प म न दि मा
 ल क स वि य ॥ उ म म
 न ला य स र ॥ उ वि ग
 न ला य ० ॥ उ र डि य
 न ला य ० ॥ पु र अ न
 य र क ॥ न सि च र्क
 प न रि न र्ध न ल र्क
 र्ति ॥ नि प र्क ग य स
 र न वि वि ॥ ॥

अथर्वद्वयमिनिर्मित
ज्ञानखभ्रविधि॥ न्यासा
र्धपात्रपूजा॥ अथर्धपात्रा
द्वयनालपूजा॥ अथर्धपात्रा
स्तु मन्त्रेन कनकावस्त्रेन
खभ्रकायावस्त्रेन अ
नने। यन्त्रनादिक्रिः स
पूजा। त्रैलोक्यानां भूत
धनमः॥ १०६॥ निज्ञानखभ्रं

अथ नववलि॥ न्यासः॥ त्रै
लोक्यैर्हरेभ्यो नमस्तु
ष्टावलिं गृह्णन् स्थाप्य ॥ स्त
मलवनायै नमस्तु ॥ १॥
यवलिं गृह्णन् स्थाप्य ॥ १॥
हरेभ्यो नमस्तु ॥ २॥
लक्ष्मीपात्र ॥ २॥ ३॥
मलानिदिपनमस्तु ॥ ३॥
मार्चनं त्रैलोक्याय ॥ ३॥
त्रैलोक्याय नमस्तु ॥
स्था॥ ३॥ ४॥

स्तु ॥ ४॥

य ॥ ५॥ १॥ २॥ ३॥ ४॥ ५॥
पनमस्तु ॥ ५॥ ६॥ ७॥ ८॥
गङ्गापात्रवलि ॥ ६॥ ७॥ ८॥
हरेभ्यो नमस्तु ॥ ७॥ ८॥
नमस्तु ॥ ८॥ ९॥
यवलिं गृह्णन् स्थाप्य ॥ ९॥
हरेभ्यो नमस्तु ॥ ९॥ १०॥
मलानिदिपनमस्तु ॥ १०॥
मार्चनं त्रैलोक्याय ॥ १०॥
त्रैलोक्याय नमस्तु ॥ १०॥
स्था॥ १०॥ ११॥

अथ त्रिपूजा ॥ रक्ताग्रि ॥ हे
 अकिं निकायकृता नो मु
 मुनेय पाप ॥ १ ॥ गामला ॥
 सदेव त्रिका मुनेय पाप ॥
 मध्यवहना ॥ हे हे सर्वानिष्टविना
 मय पनवहना मुनेय पाप ॥
 अमुपमु लोत्रिक्पनं ॥ गमय
 श्रीमन्म लोत्रा उपनी ॥ खव
 नन्मर्षपात्रममया लिंगा द्वे
 दाव उवना नाद नय्यदकि
 दमवर्न न विवडा किं वलडा
 ना ॥ अमुपमु न ॥ श्रीसर्वर्ग ॥
 विवडा किंया लिवन गुरु ॥
 अजिनका दास्यममया लिंगा ॥
 द्विनासन पूजा ॥ हौं गममय
 लिंगमसदा विवाय पाप ॥
 निद्रिपुत्रनी ॥
 गगडा विवडा किं वनासन पूजा ॥
 विववा मडा किं दूडा विपनि
 नेन संकापा ॥ द्रोह दयादि
 धर्तं गं न्यास ॥ सिंहासनाये
 पाप ॥ गुरु लिंग ॥ उं उं मुं मुं
 मृं मृं मृं मृं मृं मृं मृं मृं मृं
 पाप ॥ अह दयादि ॥ वृषा

सनाय पाप ॥ उं उं द्रो द्रो द्रो
 द्रो द्रो द्रो द्रो द्रो द्रो द्रो द्रो
 पाप ॥ ३ ॥ द्रोह दयादि ॥
 उपसुनि ॥ उं उं कानासनमा
 नुहति ॥ अगग न्यादि ॥
 गगक लोत्रमनी ॥ मूला
 वा यीना अगग लोत्रा किं कल
 लाता उलभनया ॥ यजमा
 नानुवंवा ॥ यरु संलज्जम
 र्धय विद्या नाध्वीसनाय
 नद्रु नैकृता रूया ॥ श्रीसर्व
 की ॥ विवडा वस ॥ डा किं व
 वसकथनी गया ॥ गं गमजल
 संलसनया वमूलक लोत्रा
 सनयकि ॥ सर्वसिम्डा ॥ स
 निनसीधमि निजलादा द्रोद
 आया नयजमान न्यास
 निनद्रु योका नैक ॥
 यना विवडा किं क लोत्रा किं ना
 सन पूजा ॥ गुरु नमस्कान
 या सार्धपायजानम पूजा ॥
 असासनी ॥ अथाध्यानादि ॥

वषासनायपाप॥ ॥ॐ
 नी॥ अङ्गेकासंखवर्धुं वष
 रगन्तुगर्गं रोगानन्दन्तु
 दङ्गेतिग्रीमरुसंपनसुभ
 सिधनां अङ्कठं वङ्गार्थं
 वाभखझाङ्गभूखंहीरुसिगन्तु
 वायंवनभरुयकनीविनक
 द्विनाथी॥ ॐ नपृषपाप॥ ॥
 अङ्गलि॥ ॐ अङ्गेहो नन्द
 भकिहेनवानन्दवीनाधिप
 नभसुदङ्गीकङ्गधनरुद्रा
 नकायपाङ्गलिपृषपाप॥
 ३॥ द्रोहदयादि॥ वलि॥ ॥
 आधानादि॥ ॥ सिंहसना
 योपाप॥ ॥ ॐ नी॥ नन्
 दानविनिरास्यं सिंहक
 पविहीकुरुवननेमिनाङ्गी
 सर्वरुषादिनामी॥ वनदभ
 रुयरुमापकवकुत्रिभ
 गी॥ मरुमदिगमूखाङ्गीक
 द्विनां विनयासि॥ ॐ नप
 यी॥ अङ्गलि॥ ॐ अङ्गेसं
 मरुविद्यानाङ्गधनीहं
 धीकङ्किकधनीरुद्रात्रि

निकायपाङ्गलिपृषपा
 प॥ ३॥ सोहदयादि॥
 वलि॥ ॥ ॐ नपृष
 वनीधि॥ ॥
 ॐ अङ्गेसमयपृषपअमनी
 मरुलेनवायामरुलाङ्गी
 किसदिनायपाप॥ गङ्गादि
 गङ्गाधानमठपाप॥ ॐ न
 दिदङ्गलाकपालाधिनमः॥
 पुनिपदादिपंचदङ्गानिधि
 र्यानम॥ अङ्गिध्यादि
 द्वाविभानिनङ्गुल्यधवि
 सुफादिसुफाविधिनिध्या
 गल्यधध्यादिद्वादङ्गना
 अल्यधपाप॥ अन्ननाम
 सुकलनागनाङ्गेधध॥
 रोनमादिसुफविधधध
 द्वाविधुनङ्गुअसदाधिध
 लधधधधधधधधधध
 अष्टाधधधधधधधधधध
 माससुवसधधधधधध
 वलिदद॥ ॐ नपृष
 द्वा॥
 मरुधपापङ्गनी॥ ॐ अङ्गे

स्वामाद्यद्यविनीतिविद्या
नमःपाद॥३॥वर्ति॥६॥
नमः॥

गणेशमूर्धनी॥मृगमृगनायपा
द॥गमंभीमंभीमंभीमं॥भी
कलागणेशवनायनमः॥३॥
वर्तिगणेशमृदादर्थि॥

वर्तिगणेशनी॥ननासनायपा
द॥गणेशपादपाद॥
भूतिगणेशपाद॥
लक्ष्मणपाद॥
कालवर्तिकपादमृदा
दर्थि॥७॥

गणेशमृगनी॥पद्मासना
यपाद॥सुंदरपाद॥
भूगणेशपाद॥
यानिमृदा॥

कोमाभिरुनी॥मृगनास
नायपाद॥वर्तिकृष्ण
कोमाभीमृगपाद॥३॥
भक्तिमृदादर्थि॥७॥

गणेशमृगनी॥वृषासनायन
मृगनायपाद॥
शिवमृगनायपाद॥
मृदा॥

गणेशमृगनायपाद॥
वृषमृगनायपाद॥
शिवमृगनायपाद॥

पद्मपद्मी॥सुंदरपाद॥
गणेशपाद॥
सुंदरपाद॥
शिवपाद॥

शिवपाद॥सुंदरपाद॥
गणेशपाद॥
सुंदरपाद॥
शिवपाद॥

पद्मपाद॥सुंदरपाद॥
गणेशपाद॥
सुंदरपाद॥
शिवपाद॥

पद्मपाद॥सुंदरपाद॥
गणेशपाद॥
सुंदरपाद॥
शिवपाद॥

स्वामित्वादादिदिवसस्वर्ग
नमस्तानी॥

अथसिरासनमिनाकभा
जिनमाला॥१॥ अथादि॥
यद्रमानस्यामकदवप्रति
माप्रतिष्ठाकक्रानियदा
रामनिमित्तार्थक॥१॥
स्योपाधेनम॥ १॥
गुननमस्तानी॥ वनीधिम
मुनकनवकुक्रान्यासी॥
रुलापागपुत्रनं॥ क्रोहदया
दि॥१॥ धनमृदा॥ १॥
पातपुत्रनं॥ क्रोक्रोक्रं प्रसू
नयादि॥ सोहदयादि॥
वननादि॥ धानिमृदा॥
रुगधुद्विचारमयासी॥
समिंचनादिवदन॥ सिद्ध
नपष्पतरवरी॥ धिनसि॥
दं॥ सचक्रननवाय
कृद्विकाठाकसदिगाय
पाप॥ १॥ निरुद्ध॥

अथकंठसस्तानी॥ त्रिक्रो
शोक्रोक्रो॥ दानद्विन
साय॥ १॥ किनि२ विवे

क्रादनायक्रोक्रोक्रो
॥१॥ लेखनराय॥ २॥

हृज्जलानमअथा॥ अथा
नामखोवदनापाथेकववा
यद॥ नाम॥ ३॥ कि
नि२ विवेक्रोक्रोक्रो
क्रोक्रो॥ क्रोक्रोक्रो॥
गीहलमलायक्रोहदया
यनम॥ ४॥ धन॥ १॥ किनि
२ विवेक्रोक्रोक्रोक्रो
क्रोक्रो॥ दाय॥ ५॥
दीनअथा॥ अथा॥ नाम
खोवदनापाथेक्रोक्रो
यद॥ क्रोक्रोक्रो॥ ६॥
क्रोक्रोक्रो॥ अथा॥
क्रोक्रोक्रो॥ ७॥
क्रोक्रोक्रो॥ ८॥
क्रोक्रोक्रो॥ ९॥
क्रोक्रोक्रो॥ १०॥
क्रोक्रोक्रो॥ ११॥
क्रोक्रोक्रो॥ १२॥
क्रोक्रोक्रो॥ १३॥
क्रोक्रोक्रो॥ १४॥
क्रोक्रोक्रो॥ १५॥
क्रोक्रोक्रो॥ १६॥
क्रोक्रोक्रो॥ १७॥
क्रोक्रोक्रो॥ १८॥
क्रोक्रोक्रो॥ १९॥
क्रोक्रोक्रो॥ २०॥

[illegible][illegible]

अथ कुरु नि॥ वन्दनादि सिद्धि
 इ॥ ॥ कि निरु वि अका
 दु नाथि दु अ सु यरु ॥
 ननु ॥ धा अ अ धा न अ धा
 नाम्ना वरु न पाथि दु क
 वचा यदु ॥ अव नु न ॥
 न ॥ अ नु डा म नी क म ॥
 नो ह द पा दि दु प र्जी ॥ हं दे स
 दे पा पू ॥ ॥ न प लो प ॥ धे
 धम न ना य वि न र्ति अ न
 नु द्वि गा य धी म हि न न्ध
 व कि ४ य धा द पा ॥ ३ ॥
 दे स ४ धा ति स्मो नु ला य
 न म ४ के न अ ॥ ॥ सि म
 न द्या न का व क र नु ति पु द
 नि सी क म ४ ॥ सो न जा ० न
 धे न व धा ति न की क म या
 न लो य यी ॥ स्वा न्मा नी स्य
 कु न रे न र्वा धा लो ॥ वी
 इ व धिं दु क ल य धा मी
 व कि नु क्ता प य ॥ ॥
 नो न्नी नु न्धो व कि धे न न्मा
 य न म ४ न्धो ॥ ॥ य इ म
 न स्या ति क्ता आ नि स क्ता प
 न स स न्धे म म् ॥ ॥ ॥ सि व
 र्को म लो न्धो न्धो हं दे सें दे

सा रा ॥ क न न ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 नि न स क्ता व नी ॥
 स्व सि चो र्क प ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 क यो स स दा वि धी स्व सि
 म न्धे नु न व च धा ति नी
 स्व सि सु र्वा च स्व सि र्वा ॥ ॥
 धा न्धे नु न्धो प र्धे द कि र
 न्धे व प धि धा म न न व च
 स्व सि सु र्वा च न्धे नु
 प य क र्धे व न ॥ ॥ ॥ ॥
 धे न वी सु र्वा स्व सि चो र्क
 धा ति नी ॥ स्व सि व न्धो
 न वि धि धु ४ स्व सि ४ नु द ४
 धा ति धि व ४ ॥ वि ना य क ४
 क मा न धा स्व सि म्प य
 नु व च ॥ स्व सि र्वा च क प
 लो धा स्व सि न व न व य रा ४
 स्व सि नि ध य न नु क्ता धा
 ग ना धि न धे व च ॥ स्व सि
 मा स म्प नु ४ स्व सि ल्व र
 नार्धे व व स्व नी ॥ स म्प ४
 प र्धे न ४ म्प लि स क लो
 का ४ स नी स पा ४ ॥ स्व सि
 य न्धे न ४ ग धा ४ प न्धे
 न म्प स व स ४ ॥ स्व सि
 व स ४ म्प नी चो प सि

वन्देनादिदिभिर्मन्त्राभ
 मर्मपुत्रन॥हृदिहिरास
 कुन्देनवायकउधवाय
 पाप॥३॥उंकींउं॥ह्रंकीं
 सेंदकत्रिकउधय पाप॥
 ३॥अकलेनवमाप॥४॥
 अवादीषाप्रकीर्तिना॥
 अकलेनवायवेदुयिअ
 वादयिनमानम॥४॥अथ
 गंधादि॥
 नमोनेदंअत्रियामानरु॥
 निधनआरुनि॥कींस्वाहा॥
 ३॥अनेनारुनि॥ह्रंकुडि
 यिकुलादीपायिकीं अिन
 सुखाहापुनभवना॥य००॥२॥
 निधना॥ह्रंस्वाहा॥ह्रंन॥
 क्रोकींह्रंवेदीअिवह्रंजिरवा
 यवोषटसीमनायेनाय
 ००॥३॥निधना॥ह्रंस्वाहा॥
 ३॥धानअधानअधाम
 रवीवकुनेपायह्रंकववाय
 ह्रंजानकर्महास्वाहा॥४॥
 निधन॥क्रोस्वाहा॥ह्रंन॥
 क्रोकींमरुनायिअिकींनर
 यथायवषट॥अिजानय

००॥३॥५॥निदीन॥५॥
 स्वाहा॥ह्रंन॥विनिरेवि
 अभाद्रनायिअ५अस्त्राय
 रुटनिष्क्रमनाय००॥३॥
 निधेन॥क्रो००॥नमानग
 वनिह्रंमगायिकींअ
 उर्ध्ववक्रायरुलान्नज्जअ
 नाय००॥१॥निधेन॥क्रो
 ००॥ह्रंकुडिकायिकुला
 दीपां अिकींअिपुधविकु
 यस्त्राकननावर्धुह्रंदा
 य००॥ह्रंन॥र॥निधे
 न॥ह्रं००॥ह्रंन॥क्रोकीं
 ह्रंवेदीनअिवह्रंअिदकि
 हावक्रायवुनवन्धनदी
 क्रायदानसमावर्धुनाय
 ००॥२॥निधेन॥ह्रं००॥
 ह्रंन॥धानअधानअध
 नामरवीवकुनेपायह्रंउर
 नवक्रायविकारुय००॥
 १०॥क्रो००॥निधेन॥३॥
 क्रोकींमरुनायिअिकीं
 अिपुधवक्राययगुध
 मारुपिणविसुक्रनाय०
 ०॥॥निधेन॥विनिरे

कृत्तिकाधृदिसर्वदेवता
 दृगादृग्निं॥ॐ॥निनादि
 सिधमर्नी॥ ॥पुनश्चलना
 नि॥कांक्रुपात्तायस्त्राता॥
 वांबदकनाधम००॥मंमन
 पतये००॥ ॥ॐ॥दुप००॥
 अन्नय॥यमाया॥मर्मनय
 ००॥वन्नूलमय॥वायव॥क
 र्वाया॥ॐ॥अनाया॥अध
 सि॥धर्मा॥ ॥वक्राया॥
 दि॥अष्टमार्गकाय००॥
 इयादिगा॥ताय००॥॥अ
 भिगा॥अष्टहेनय॥स०॥॥उ
 यागमय॥अष्टगधिपति॥य०
 ००॥॥दुकादि॥दृष्टाहेनव
 गा॥ताय०॥ ॥नुवैवक्रा
 या॥दीनवदधि॥वक्राकि॥म
 मयलो॥गा॥नागय॥अष्ट
 ची॥शीला॥की॥गम॥अस
 ०॥कुता॥ना॥दि॥उ॥पा॥ला॥ग
 दा॥प॥नि॥वि॥व॥लि॥प॥व॥व॥लि
 व॥दि॥का॥ना॥दि॥स॥ध॥दि॥या॥द
 ना॥दृ॥नि॥द॥या॥०॥॥सं॥स॥व
 द॥न॥प॥द्व॥वै॥पु॥नी॥ने॥नि
 धा॥या॥॥द॥ना॥दृ॥नि॥पु॥नी॥॥
 वा॥मी॥॥व॥क्रा॥वि॥पु॥र्म॥दे॥०॥॥

सनेपानिदरुनश्चकालनकुं
 पुत्रगावागायाकुंतुनागम
 गुरुगातादिद्वानात्रिधा
 मदि॥लो॥नम०॥॥या॥मि॥द्वि॥
 इना॥या॥गता॥पनि॥वदु॥का०
 कुत॥पा॥ला॥दि॥का॥या॥मि॥स॥ध
 सिकु॥अ॥मि॥त्वे॥नि॥म॥न॥दु॥ले
 दा॥अ॥म॥पु॥नी॥दु॥ने॥न॥सा॥ता॥॥
 ॥ॐ॥नि॥द॥ना॥दृ॥नि॥पु॥नी॥॥ ॥

नरमि॥ला॥दृ॥नि॥०॥॥दि॥
 पा॥या॥पु॥दृ॥नी॥॥वि॥नि॥॥वि
 धु॥का॥दु॥ना॥या॥दु॥अ॥सु॥या
 रु॥द॥पा॥पु॥॥ ॥न॥मा॥त॥ग
 वा॥ने॥द॥त्य॥मे॥ला॥यि॥क्रो॥दु॥द
 या॥या॥ने॥म०॥पा॥पु॥॥ ॥
 पु॥न॥पु॥नी॥॥अ॥मु॥ने॥व॥क
 ॥०॥न॥से॥मा॥र्कु॥नी॥॥ ॥व्री
 दि॥पा॥उ॥वी॥दि॥ने॥ध॥म॥॥
 या॥या॥ने॥नि॥ली॥द॥वि॥दु॥म
 इ॥ना॥यी॥न॥न॥क॥व॥म॥स॥मि
 धा॥अ॥कु॥मा॥ला॥दि॥पा॥त्रि॥नि
 धा॥या॥॥अ॥वा॥य॥पु॥दृ॥नी॥॥
 आ॥वा॥या॥म॥ने॥या॥द॥सु॥य
 च॥न॥पु॥या॥य॥दु॥॥प॥वि॥वि॥

नमः॥ ॥ इति पाठः स
 मर्थमवाच्यः॥ देवीयमं क
 रत्यदि, ममाधिसर्वमाधकी।
 नामपाठस्मिन् प्रीतिरवगा
 यति गच्छतीति॥ आद्यः ४३
 चक्रेणानीपुत्रपौत्रधनानि
 च। देवगानुनी ४३ सादन
 सर्वकार्योत्तिसिद्धयः॥ ॥
 श्रीगणेशाय नमः॥ आवा
 यंदाहरीत्याचीरपायप
 र्शनी॥ अस्तु त्मर्थपात्रमभू
 त्नी॥ कवचनावगुह्यनी॥
 वीधनमृदापनी कृत्या॥
 मन्त्रानामभिलि॥ वनीति
 धर्तृगानपुत्रः॥ ॥ तमय
 श्रीमन्मन्त्रिगुणः॥ इदं ना
 लोच्यदि नवंधनी ४३॥
 नमस्कात्रं कल्या॥ संकल्पी
 यद्गमनस्य निष्कम्यदं
 वादिगुणिना पुनिष्ठकृता
 विनयस्तु निमित्तार्थः ॥ श्री
 कृता विनयि तदा नि का
 य विष्ठा दानि मरुं कनि
 धा॥ ॥ तदं ननी ४३
 नैते ४३ पावनं पत्रमपि
 न ४३ तस्मात् ७ खदीयहस्य

यमसिद्धिपात्रमर्थमपि
 न॥ ७३०॥ विष्ठा नानां कृत्या॥
 आरुणिं ॥ इति कृत्या ७३॥
 य ००॥ ३॥ य ००॥ ३॥
 आदी कृत्या ॥ वीं वरु कना
 ७३०॥ ३॥ ७३०॥ ३॥
 लो॥ ॥ तमं गदापत्र ००॥
 विष्ठा ७३०॥ ३॥ ७३०॥ ३॥
 देवस्य॥
 लो॥ ७३०॥ ३॥ ७३०॥ ३॥
 य ००॥ ३॥ ७३०॥ ३॥
 य॥ ७३०॥ ३॥ ७३०॥ ३॥
 सैकु वनाय॥ ७३०॥ ३॥
 य॥ ७३०॥ ३॥ ७३०॥ ३॥
 स्यादा॥ ॥ य ००॥ ३॥
 ७३०॥ ३॥ ७३०॥ ३॥
 नाति च ७३०॥ ३॥ ७३०॥ ३॥
 मी ७३०॥ ३॥ ७३०॥ ३॥
 क ७३०॥ ३॥ ७३०॥ ३॥
 य ७३०॥ ३॥ ७३०॥ ३॥
 ला॥ ७३०॥ ३॥ ७३०॥ ३॥
 ७३०॥ ३॥ ७३०॥ ३॥
 ७३०॥ ३॥ ७३०॥ ३॥
 ७३०॥ ३॥ ७३०॥ ३॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥
 ॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ ०० ॥ ॥ पद्मम् ॥
 रं सख्यं गमयन् सखी व
 ऽतिविविधं नानासंस्कृतम् ॥
 पुनस्तु भिन्नं स्तुतिं
 शिवस्तुतिं स्तुतिं नमः ॥
 ॐ पद्ममात्रं को गतम् ॥ ॥

अथाथ ०० ॥ विद्याया ०० ॥
 अतिनाथ ०० ॥ अथ पञ्चम
 नाथ ॥ उक्तं मे सुप्रसन्नं ॥
 रं ॥ अथ कथं रं ०० ॥ ॥
 पद्मे ॥ अथ विद्याया पञ्चम
 यातिनाथ्या पञ्चमिना
 मुनिनाथ्या पञ्चमिना
 म्नाथ्या पञ्चमिना ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

अथिनाथ ०० ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ०० ॥ ॥
 वरुणाथ ॥ उक्तं मे सुप्रसन्नं ॥
 रं ॥ अथ कथं रं ०० ॥ ॥
 पद्मे ॥ अथ विद्याया पञ्चम
 यातिनाथ्या पञ्चमिना
 मुनिनाथ्या पञ्चमिना
 म्नाथ्या पञ्चमिना ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ॥

अथिनाथ ०० ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ०० ॥
 वरुणाथ ॥ उक्तं मे सुप्रसन्नं ॥
 रं ॥ अथ कथं रं ०० ॥ ॥
 पद्मे ॥ अथ विद्याया पञ्चम
 यातिनाथ्या पञ्चमिना
 मुनिनाथ्या पञ्चमिना
 म्नाथ्या पञ्चमिना ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

अथिनाथ ०० ॥ नमो भगवते वासुदेवाय ०० ॥
 वरुणाथ ॥ उक्तं मे सुप्रसन्नं ॥
 रं ॥ अथ कथं रं ०० ॥ ॥
 पद्मे ॥ अथ विद्याया पञ्चम
 यातिनाथ्या पञ्चमिना
 मुनिनाथ्या पञ्चमिना
 म्नाथ्या पञ्चमिना ॥
 ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

दिगङ्गानाञ्जलिप्रभुः
 नैनासादा॥ ॐ नितिला
 दूतिप्रभुः॥
 नमो भक्तमयीकान्त॥
 यद्मनुष्यान्गं न
 भक्तं वा ज्ञानमनुष्यं
 गत्वा भूयद्दिकिकल
 भदि सीक्ताया दवा ज्ञ
 मभ्यागमुपादिदम्यनीति
 भय॥ नित्यं लब्धमव
 न्नादिसिद्धिः॥
 नमो कलापुङ्गवै॥ गुण
 नमस्काङ्गमासाधपा
 पुङ्गा॥ ॥ बलिपुङ्गव
 ॥ भक्तमनुष्यवर्तिनः
 रसादा॥ कुङ्कुमपा
 योधाभिनीत्य॥ सध्वि
 वृक्तं रत्नगद्गल्य॥ द
 तुकादिगद्गल्य॥ भक्त
 पञ्चपङ्क्तिः॥ पूर्वदि
 नपञ्चपङ्क्तिः॥ भक्त
 सिद्धीभ्यसावाभ्यक्ताने
 नभक्तवदुदुर्गत्तदने
 मद्भक्तमनुभक्तोपि॥ भ
 भक्तोऽवन्मादिदवसि
 रानो भक्तमदिदसि रान

नानिभयान्निनयन्मा
 नुमाभिमिनिनयन्मा
 पुङ्गाविभक्तो॥ दन्व
 नविभक्तो नस्मर्त्तपनिपु
 मस्तु॥ ॥ बलिपु
 मस्तुनी॥ नित्यं नदमिपु
 क्रिन्नुभक्तो नदमिपु
 ॥ ॥ नमो भक्तमयी
 भक्तमयी॥ पूर्वदि॥ लुङ्गान
 समुद्रायापापु॥ भक्त
 नमो भक्तमयीपापु॥ १॥
 भक्तमयी॥ नमो भक्तमयी
 पापु॥ भक्तमयीपापु॥
 भक्तमयी॥ २॥ दिकि
 भक्तमयी॥ ३॥ भक्त
 भक्तमयी॥ ४॥ भक्त
 भक्तमयी॥ ५॥ भक्त
 भक्तमयी॥ ६॥ भक्त
 भक्तमयी॥ ७॥ भक्त
 भक्तमयी॥ ८॥ भक्त
 भक्तमयी॥ ९॥ भक्त
 भक्तमयी॥ १०॥ भक्त

समुद्राय पापु ॥ कंकलि
कनागनाजाय पापु ॥ ३॥
ॐ निपुत्रीयाय कलायाय

जा ॥

पुर्थ ॥ मलिका ॥ नभा लंग
वति हल्यम ॥ लायै क्रो ह
दयाय मलिका मूर्ति यपा
पु ॥ १ ॥ अरु नो कवायी ॥
कुं कुं ठिका यै कलादीपा
पुं कुं कुं ठिका न सन्नाहा
कवाय मूर्ति यपापु ॥ २ ॥
दङ्गिना पल्लव ॥ क्रो क्रो
रुं वधने ठिका रव ठिका
यथा पद पल्लव मूर्ति य
पापु ॥ ३ ॥ अरु नो कवायी
दय ॥ यै न ज्ञाने अथा
नाम रवी नरु नपा ये क्रो
कवचाय दू पद्मा दय म
रुं यपापु ॥ ४ ॥ पठि यम
कसि ॥ क्रो क्रो मरु नादि
कायै क्रो न ज्ञाने यपाय वष
टक सिक मूर्ति यपापु ॥
५ ॥ नायय पञ्च गयी ॥
थि याना यै य विनरु

सुनुदाय थीमदि नभा
नदुष्ट पुधा दया ७ पञ्चग
वा मूर्ति यपापु ॥ ६ ॥ ३
न न पञ्चम मरु ॥ कि नि रवि
थकी कुना ये क्रु ४ अमुना
रुद पञ्चम मरु मूर्ति यपा
पु ॥ १ ॥ ० ॥ अम न ॥ डी हि ॥
रुं ३ अम नि क मूर्ति यपापु ॥
२ ॥ ० ॥ लक्ष्मी य विपुत्र नी ॥

थि बुद्ध ॥ रुस ॥ नदी सीगभा
दक ॥ ग ॥ अदक ॥ रि न ॥ अद
क ॥ ग ॥ अदक ॥ नो जो दक
रुला दक ॥ कु ॥ अदक ॥ ० ॥
रु नो स ॥ लाजा दि ॥ न गानि
सुवो हि मरु लो मरु दपापु
रु य ॥ १ ॥ धूप दीपा ॥ ७ ॥
जुग न्धम दि ॥ स्नान कला
० अ च न वि वि सुवो पि नि
पुर्थ मरु ॥ ॥ ॥

नग ॥ देवा नि मरु ॥ ॥
यजमान ना ॥ कि नि रवि
वका कु ना ये क्रु ४ अमुना
य रुद ॥ ॥ व ॥ ला ॥ ॥ कु स

दं वीक्रातिष्वकयाभिः
२॥०॥ यद्वृक्षैः कलाङ्गाङ्ग
षथीस्मान् ॥

दं सेंदृति नृत्तं तिष्वर्कं न
म॥३॥ उर्वरस्मातिष्वर्कं २॥
मूलनदीसीमापादकाति
ष्वर्कं २॥ उर्वरमर्कं ॥ गम्भी
दकातिष्वर्कं २॥ हिमरुध्मद
कातिष्वर्कं २॥ गम्भीरदका
तिष्वर्कं २॥ नोनादकाति
ष्वर्कं २॥ दलादकातिष्व
र्कं २॥ कम्भीरदकातिष्वर्क
२॥ ०६॥ कोनासादकातिष्व
र्कं २॥ कपादकातिष्वर्क
२॥ वापादकातिष्वर्कं २॥
नीगादकातिष्वर्कं २॥
गम्भीरनातिष्वर्कं २॥
मूलनङ्गागीवासेरुत्तं वा
सापथ्यं ॥ दलातिष्व
र्कं २॥ लाङ्गातिष्वर्कं न
म॥३॥ नायराणां ॥

धनं किं न सा विधेयकर्म
पूजायाकावर्तं जनम
लादङ्गिनामविस्मयैः
नविपकं ॥ पञ्चिनस
थमविपय ॥ पत्नी ॥ कु

कीमरुत्तानिकाधका
नृत्तयायवषट्पाद
मन्तुनापायावर्तं ॥

चन्दनसिंदूरः यस्मिन् पवीनः
सगुणः पृथ्वीमालादिसेरु
षा ॥ सैरुअगानिप्रतिष्ठा ॥
यावद्वालास्वनास्यति ॥
दवयामूर्तिर्नानिनास्मात्
कृपयाय ॥ ॥ देवमुक्ता
नमन् ॥ विनिर्वाविधिका
ननाथद्वारम्भुयदु
पाय ॥ कनकं ॥ यज्ञमा
नेन देवज्ञानकं ॥ आवा
यं न देवद्वारम्भुयदु
गुलीखनरास्यं स्त्रिया
चनीपण्य ॥ आसुयदु
मवृत्तनायदाले ॥ सैरु
दुगुय्यादिवायैरुत्तया
गुविधायः परमरुपं
गामयित्वा अविचिक्रं
कृत्वा नयादङ्गिनापानि
कृत्वा नयादङ्गिनापानि
कापनिपूर्वरागानिध
पथ्य ॥ ००॥ निपाया ॥

आचार्य नमो सादिताया
कलाप्रवर्तनी ॥ अस्वकद
वनाप्रलोमनेरा ॥ अ॥
लि३ ॥ सावधकं वा ॥

देवत्वं तुल्यसधदा रोव
नादागमनदाय कं ॥ ॥
यनाभावजिके कला ॥
दिपक्षस्येरावकुमिपु
राकुरेण रीत्याः ॥ आः
चार्यमिगत्वेन देव
॥ अमधया ॥ मर्त्ति ॥

द्रो०० ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
सगत्यायस्तरा ॥ समिध
सरस्याय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
विद्यानेत्याय ०० ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ०० ॥ ३ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
य ०० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
नयाय पुका नहाय ॥ ॥ ॥
नयजमा नोति नस्व न ॥ ॥
धनीका नया ॥ ॥

नगादेवदधा क्रियामाने
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

महाभानिकल्पनाय ०० ॥

त्याय ॥ अ॥ वा नयजमानेना ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

न ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

स्वकन्दायथीमहिगना ॥

दुपुजादयादुपुकल्पनाय

०० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

हेरेसरेदीयप्रदानाय ०० ॥

॥ ॥ ॥ ०० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

अद्यागामयीवदुपयाय

कुं कवजायदुं नकाकन

नोय ०० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

०० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

हृत्कमलाय ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

दुःखनाय ०० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

०० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

लादीपा ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

या ०० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

य००॥ देवपादवर्धनैरिव
 नृजपा ॥ त्याय ॥ क्रो००॥
 कुंकुमरुक्ताशिकाय
 क्रोभयकनरुमय००॥
 आवर्तद०॥ ॥ अं
 ००॥ अं अय गम अं प्राडा
 नाय००॥ अर्ली ॥ अं ३००॥
 अं नो अं अद नाय००॥
 कृष्ण न नाजीकदनी ॥
 अं अस्यासा ॥ अस्या नाथ
 यविदाहं स्वकृदाययी
 मदी ॥ न नो नरु ८ पुथाद
 या ० सासा ॥ अव य नमल
 ८० ॥ कां लु विद य पाया ॥
 ॥ गम अर्ग ॥ मन्तुनी
 अया कला ॥ अम दं न ना
 म् अर्ली ॥ ॥ अं ३००॥
 दव सुक्ता प नाय००॥
 ॥ अं अं हं हं सें स्वासा ॥
 अं अं हं हं सें सखी पा गम
 य००॥ पुवा ला पावदव
 नक वद न विद्या ॥ न
 मर्तिकायक ॥
 अं अ न सा ला स अं अ न
 ॥ ॥ अं अ न पुदान ॥ अं
 अं अ न पुदाना य००॥
 अं ३००॥ अं म य की स य स

० क ना अम य००॥ ॥
 क्रो००॥ कां कुं मरु नाशिका
 यं क्रो नि ८ कु म नाय००॥
 कं स्वासा ॥ कि नि २ वि अका
 द नायं कृ ८ ना म क न र म य
 ००॥ यथ म द व स ना म
 लि वि त्या ल र्ग प्राडा य ॥
 आव मनी ॥ ॥ कृ ८००॥
 कि नि २ वि अका द नाय
 कृ ८ द द रु ला प्राडा नाय
 ००॥ सि पि नि न द्याय ॥ द
 ला प्राडा न या चक ॥ अ
 च मनी ॥ ॥ च न्ना सा वा
 य म अ नि म र्ग ॥ ग म म य लि
 ग र्ग द व या न ॥ ॥ क्रो लि
 रा कुं कुं मरु नाशिका
 यं क्रो व षट् अं न प्राडा ना
 य००॥ च न्ना न त्या का
 व प्राडा नी ॥ आ च म नी च ॥
 ॥ ॥ कृ ००॥ अं अं अं अं न
 म र्गी व द नू या यी कृ
 वृत्ता क न र म य००॥ ल
 र्ग ला न स र्ग ला ना ला व नी ॥
 ॥ ॥ कृ ००॥ क्रां क्रां कृ व नी
 अि व कृं यो षट् क र्ग र्ग
 दा य००॥ ल र्ग म र्ग न क र्ग
 व नी ॥

[illegible]

वसुधैव कुटुम्बकम् ॥ ००॥
नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ०१॥
श्रीगुरुभ्यो नमः ॥ ०२॥
आत्मैव ज्ञानं ॥ ०३॥
अहंकारं त्यज ॥ ०४॥
मायां लब्ध्वा ॥ ०५॥
दृष्टिनिष्ठाया ॥ ०६॥
मायां प्रविश्य ॥ ०७॥
कुर्वन्तु कर्माणि ॥ ०८॥
इति श्रीमद्भागवतपुराणे ॥ १०॥

सर्वं मयि ॥

॥

पापुन त्याप पापु ॥ उप
सु न त्याप पापु ॥ मनस
न त्याप ॥ बुद्धि न त्याप पा
पु ॥ अहंका न त्याप पा
पु ॥ अहंति न त्याप पापु ॥
नो त्यादि हृदयार्त्त ॥

पुनः प न त्याप पापु ॥ नाग
न त्याप पापु ॥ नीति न त्या
प पापु ॥ कालो न त्याप
पापु ॥ कला न त्याप पापु ॥
माया न त्याप पापु ॥ ह
दयादि नो लो म लो म ॥

विद्या न त्याप पापु ॥ स
कु न त्याप पापु ॥ वैवेक्य
न त्याप पापु ॥ सदा वि
व न त्याप पापु ॥ अक्रि न
त्याप पापु ॥ शिव न त्याप
पापु ॥ कालो न त्यादि लो
ला न ॥ अहंति सा हिंसा न त्या
दि ॥ ३५ ॥

असा रगव निष्ठा बुद्धि वक्रा
य पापु ॥ दुर्भुक् भुक्ता येष्ठा
पूर्वव ॥ क्लेश पापु ॥ क्रोधि
हं वधे न विषय एव हिंसा व
क्रिया पापु ॥ अश्रु न त्याप

अध्याना म लो ॥ अति न न वक्रो य
पापु ॥ कौकौ मरु का नि क्रो य
एष विषय वक्रा य पापु ॥ वि
विश्वका क नो य एष पाप
न वक्रा य पापु ॥ विनिवक्तव्य
मवति एषा ॥

अति ना भूते न वा य पापु ॥
नालो ॥ न न न वा य पापु ॥
हृदय ॥ चरु शि न वा य पापु ॥
मूर्ति ॥ अथ ते न वा य पापु ॥
गीतायी ॥ उन्मरु ते न वा य
पापु ॥ उच्छ ॥ व पा ली ते न वा
य पापु ॥ अथ ॥ ली य न ते न वा
य पापु ॥ लोलाट ॥ शीला न ते
न वा य पापु ॥ शिखायी ॥ ३६ ॥

शुद्धि न व न्यास ॥
दं हृदय न न म आ पापु ॥ कुं
शि न भू स्या ह्य पापु ॥ लो वि
ला यं योष ट पापु ॥ नैव व वा
य दं पापु ॥ यं न ग ग पा य व
ष ट पापु ॥ अहं अहं य ह
पापु ॥ ॥ हं वि रवा स्का न
पापु ॥ संति न स्का न पापु ॥
कं लोलाट पापु ॥ मं व क्ता
य पापु ॥ लो हृदय य पापु ॥
वं नालो पापु ॥ नैरुक्त पापु ॥
यं कानो पापु ॥ अं पाद ह य
पापु ॥ ३७ ॥ संदे न वा न्माद ह

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥

धनविश्वकर्मापुत्रनंदिन
 धर्मकलासा ॥ इदमासनर
 सार्धवन्दनेपद्मपदीनपद्म
 दक्षिणमङ्कारंतिद्रुमाय ॥ मणि
 लसाम्पला ॥ ॥ गणदेव
 स्कायनधर्मपद्मलीलाधर्मस
 पद्मवासनधर्मपद्मलीलापद्म
 उद्गपद्मपद्मनन्तवीरिण
 आदिनमालाकारं ॥ धर्म
 धनकावन्दवदिभ्रातृक
 मुंगलिधर्मपद्मनगायस्था
 नदीलाभविचित्रनरला
 धनकावन्दनसर्वार्थसंगप
 दपद्मकामाननधर्मला
 पद्मनदीनीयन ॥ ननुकि
 पद्मिना ॥ किनादुर्गि ॥
 अस्मकदेवतामूलो न ॥
 अ० ॥ वन्दनी ॥ श्रीकाना
 धर्मदेवधर्मकिनादेव
 सत्वासनी ॥ धर्मनोयद्र
 मानायसर्विकामयत्नया
 पुलास्थाना ॥ ॥ धर्मचा
 र्यदेवदकनमीयद्रमा
 नदिकीस्थनलिस्थानमा
 ॥ ॥ किनादीलायार्थ ॥

पुं अमवनाहा कल्पि॥ अ
 आदि॥ अमपनमश्चनसध
 र्दनाविज्ञानमपि नः॥ नप
 सवापूनाअपमध्व॥ अप
 र्षापूव॥ अमकांतांशु
 रत्त्वर्थमिहोत्तमसुखा
 मन॥ सवदिनेवत्वदवीप्र
 त्यदं पवित्रं न॥ यमनाप
 कमानापसर्वका मरुती
 सद॥ पदन्त्यासंप्रनादत्य
 वनेह्रिबदिगीपक॥ रव
 लाहृतीतीयेकमोहिव
 वगुर्थकी॥ नत्वंजपश्चमं
 कंमनुवीवगुषषमी॥ सफ
 र्मपदविम्यासीपनंरासी
 गुगोषकी॥ जयंमसिमरा
 रविस्कापनंदवनादुवह
 दवमर्तनादवापिदवीम
 नुनादवनीदवद्वानगवा
 हंरुदयंजलांनन॥
 उद्योषवलिंकांकापावि
 यापी० नहुमंविदु॥ प्र
 तिहृष्टिनासिदयमि
 मप्रनिष्ठातवस्वरी॥
 मानिपुनपयमर्

यजमानापिष्टकपाशनीमु
दिपदिनिर्गमामुबवतुष्ये
॥ अत्रामुसर्वशक्तानीश्वर
नास्तन्येववायजमानसह
सप्तपशुपुनस्पवथवः ॥ नर
नुसद्वयश्वसर्वदायन
मानसः ॥ पावद्वयसर्वश्व
परिनीसकसागनायावद
काशीगमवनाथ ॥ लक्ष्मी
स्मिन्नाहव ॥ पावद्वयश्व
पवनाममक्तिनीश्वलाव
राशनाव ॥ लक्ष्मीनीश्वनी
स्मिन्नाहव ॥ पावद्वयश्व
अथवाचनस्मिन्नाहव ॥
तवे ॥ यजमानस्यश्वस
श्वी ॥ अत्रामुसर्वश्वनाथ
कुनिमायुनिष्ठाकुजातिनय
रुद्रमिन्नाहव ॥ लक्ष्मीनी
नाहव ॥ अत्रामुसर्वश्व
तवी ॥ ३ ॥ नाथश्वानीनम
स्मानयाय ॥ स्मिन्नाहव ॥
नयक ॥ ॥ स्मिन्नाहव ॥
लोपाविधिः ॥

थनमगदनादवासुतुला
नलाया ॥ वेन्दनसिंहनस
श्वमदिपथाश्वीर्कदी ॥
मुनिष्ठाकुलोनीश्वनी ॥
श्वी ॥ वेन्दनसिंहनस

श्वी ॥ वेन्दनसिंहनस ॥ ३ ॥
पुनिष्ठाकुलोनीश्वनी ॥
लक्ष्मी ॥ ॥ नगादवाचनी ॥
दवाचनी ॥ अत्रामुसर्वश्व
थनमगदनादवासुतुला
काशीगमवनाथ ॥ लक्ष्मी
पुनिष्ठाकुलोनीश्वनी ॥
पावद्वयश्वनाथ ॥ लक्ष्मी
जगतीपावद्वयश्वनी ॥
गमपावद्वयश्वनाथ ॥
नाथगमपावद्वयश्वनी ॥
श्वी ॥ अत्रामुसर्वश्व
रुद्रमिन्नाहव ॥ लक्ष्मी
नगातीपावद्वयश्वनी ॥
सप्तपशुपुनस्पवथवः ॥
श्वी ॥ अत्रामुसर्वश्व
पावद्वयश्वनी ॥ लक्ष्मी
पुनिष्ठाकुलोनीश्वनी ॥

थनवाचनसुतुलायाय ॥
पञ्चमनपञ्चगव्य ॥
लोप्तानादिबन्दनसिंह
नद्वयश्वनी ॥
श्वपनाकाश्वनी ॥
श्वपनीगपुष्पादिनास
रेश्वनी ॥ यथमविधमन
वासुतुलादवाचनी ॥
श्वपञ्चपञ्चपञ्च

यागपथ्यनैधनकाव ॥
आहुतिं ॥ स्विं स्त्रात् ॥ ३ ॥
दृष्टं न ॥ वा सुभुम्भुमासि
निष्कृत्त ॥ सिधिसुहृत्
य ॥ ॥ धनैधनकाव ॥

नोऽग्निस्त्विनागानीय ॥
अधनो ॥ वलिं आहुतिं अव
रुत्तु नैधन्यासिष्कृत्त
निरुप ॥ गालयदिह
नैव नैव नैव नैव ॥
नय सुभुम्भुमासि
३ ॥ पठुमनुकृत्त
क ॥ ॥ संकृत्त
सुपा अग्निनासि
॥ ॥ धनैधनकाव
मथीयक ॥ मनु
यत्तु सुभुम्भुमासि
नपथ्य ॥ ॥ मां
विनागानीय ॥
लकीदयकाव ॥
न ॥ लोभ ॥
वत् ॥ विवृत्त
पिमां सवत्तुका
का ॥ ॥ २ ॥
२ नैव नैव नैव ॥

पञ्चधनवत् ॥ यागमन्त्र
यन्मूर्ध्नि दहि ॥ नैधनैव
पठिष्यमदापथ्य ॥
दुयं नैधन ॥
यद्वा अग्निनासि
॥ ॥ ॥
नैव नैव नैव
पथ्य ॥
नपावकथनीय
अंकाप ॥
दहि ॥
सुभुम्भुमासि
म ॥
रा ॥
अंकाप ॥
नैव नैव नैव
विपति ॥
नैव नैव नैव
पिपति ॥
राग ॥
विनागानीय
३ ॥
नैव नैव नैव
पिपति ॥
राग ॥
विनागानीय
३ ॥

नगः पश्चिधमाकाकापार्थ
 कादिकथनापूवादिउरुना
 नंमूलधमायाउरुमानन
 रापकेनमिमादथस॥
 ॥ वाच्यं ॥ मज्जिमस्य
 नागार्थनकनयाविना
 न॥ कोनरासंपदसोर्वा
 धनकापसिद्धिदीदधाने
 सिद्धिदं सर्वपश्चनरुली
 प३ न॥ पश्चनरुली ॥

अथसामिदानीं ॥ मांसं
 धनीं ॥ अमुमनेनां अर्थपा
 नलोखनराये ॥ इं अयु
 र्वा ॥ वं धनमद्रा ॥ यं १०
 न१० वं १० इय नथमूरा
 मनुममपि १० ॥ रुदगा
 लोययदिगवधनीधोनि
 मद्राकनने ॥ आपयक
 माला ॥ वाच्यं ॥ मद्रा
 नैतंमाकागस्यपिभि
 नने ॥ ठिकालीमसिमक
 रुमद्रमुनासमैरव० सि
 का ॥ नमोसराधनसालिन
 नुला ॥ साविरी ॥ यवदी नान
 सासनकीडा ॥ मद्रा ॥ सिम
 री ॥ नगः ॥ रुदः ॥ भिरवा ॥ रवः
 स ॥ रुदः ॥ अमनद्रपम
 यथमकविभिना ॥ रुवाय

कासिद्धिमवावृत्ता ॥ ॥
 नगामासादुनिमालरु० ॥
 निश्वादिक्कुक्रासगसि
 कादधमिदि ॥ अठिनाझादि
 ०० रुदि ॥ अठिनीधवम
 नुनरायदुगनसर ॥ ॥ ॥
 नवदसदागमपनप ॥
 नागसाध्यागममरुकीप
 नप ॥ ०० निमोसादुनि

अथठिनाकादुनि ॥ ठिना
 सवकेकापावपश्चसि
 मगपश्चगायाअलिना
 सीधादु ॥ ॥ सायमननु ॥
 कौंकीमरुकाभिनायैका
 वषदपाय ॥ ॥ अर्थपाय
 लंखनराया ॥ किनिभवि
 अकाइनायेदुअमनाय
 रुद ॥ ॥ नाठनी ॥ रं ॥ पा
 पु ॥ ॥ अयुगुरुनी ॥ धा
 अथाअजायागामखीव
 रुनापाथी ॥ ॥ रुपाय ॥
 रं ॥ नमडा ॥ ॥ चन्द्रनासि
 रुनद ॥ रुद ॥ मकाकदि
 पगाकाववपगापअद

यानेन कथय कानि लोकेषु
 यित्वा । पर्वजगत्त्रिभुवः
 न ॥ मन्त्राय धम ॥ मूर्तिं
 मूर्तिं पापु ॥ क्रोहदयो दिव
 ज्ञेन प्रजा ॥ मूलमसि प
 र्माक्रादुक्ता मने प्रस्यंती
 दिपातु सधमस्वर्धने ॥
 मूलमनुनवा क्रत्वलाख
 निरुध ॥ मूलमनु कलाव
 मा क्रैवाय क ॥ मूलमनु
 नदादाय ॥ मूलमनु क
 दाव ॥ सासु मया पूरुद
 यर्क ॥ ॥ मूलमनु न
 जवला उवसी ॥ खवला
 खवसं ॥ उवउवसी ॥ ख
 व ॥ खववसी ॥ अग्निपा म
 ॥ अस्त्रे ॥ अग्निपा म
 दाय मनु ॥ नभा रगाव
 गीहृत्क मला धी क्रो नमः
 खादा ॥ ॥ अग्निपा म
 वज्रपथ मनु ॥ हं हरे ॥
 अग्निपा म नो क ॥ ॥ खा
 दा ॥ नुं ॥ अग्निपा म नो क
 पना मां क ॥ ॥ खादा ॥ ३ ॥
 अग्निपा म नो क ॥ ॥

धमस्वचर्कदाय ॥
 इवा सधम ॥ पंचधमना पा
 पान ॥ समप ॥ सुना न स्यि
 र्धम ॥ वाक्सी ॥ नुं ॥ अग्निपा म
 वसी ॥ खं ॥ गला पतिवटर्क
 अग्निपा म ॥ गली ॥ ख
 सर्वदेवा ॥ सगला गला य
 गाम ॥ ली ॥ विन्दु चक्र ॥ अ
 र्धम ॥ कर्तव्य पूर्व ॥ अलि व
 लि ॥ सदि ॥ न पर्व चपा नो दि यर्क
 संशुखा ॥ सर्वदेवा ॥ कोला न
 मखय ॥ गला पा ॥ पुव ॥ ४ ॥ अ
 गी खादा ॥ ॥ पर्वधमना
 यदि ॥ गसी ॥ गुरु पीद नका व
 यव ॥ २ ॥ धम ॥ पसी ॥ लोक पाथी
 न ॥ ॥ मूलधमना ॥ को सुक
 लां ॥ अग्निपा म ॥ ला ॥ वा ॥ अग्नि
 कोला ॥ सी ॥ लोक पाथी ॥
 धन ॥ पुसा ॥ दसम ॥ य वि यका
 क्रसी ॥ ॥ ॥ नि ॥ अग्निपा म
 धी ॥
 नगा ॥ यधम ॥ सकि ॥ सी ॥ यका ॥ दू
 मूलमनु ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 अग्निपा म ॥ नो ॥ नो ॥ यका ॥
 पसि ॥ व ॥ गमी ॥ सी ॥ व ॥

[illegible]

यो०॥ च०॥ यावद्भीति
 स्वनस्य॥ यजमानो य
 हा॥ नैवाय॥ ॥ अथार्थ
 यार्थ॥ उ० स्वाहा॥ घ० न॥
 र्विदवीषयुक्ताभावदु॥ ॥ ॥
 मन्त्राय॥ ॥ न० ॥ अथ
 रिक्ता नया॥ अ० म० क० म०
 मालाकासीविद्य॥ स्वस्व
 मन्त्र॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 न॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 उ०॥ घ० न॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 भिवा० न० वसिष्ठसु० ग०
 ह० न० ग० ल० का० ग० ल०
 गी० या० म० ल० म० म० व० न०
 ग० म० गी० व० सी० म० न०
 वा० ॥ सु० ॥ न० ॥ ॥ ॥ ॥
 क० न० य० न० स० क० ल०
 स्वस्वियासि० ग० ॥ ॥ ॥
 क० नि० व० प० न० म० र० वि०
 क० पु० वि० क० र्थ० स्वाहा॥
 नि० ॥ अ० पा० ॥ ॥ ॥ ॥
 अ० व० ल० अ० न० य० अ० क०
 न० य० प० दी० य० उ० प०
 य० न० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 न० ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥

क्रीडुं शिखास्वकन्देन वा
 यमभिनिकायास्वाहा ॥ १० ॥
 अमिर्धुनिनिर्द्धि निन
 सिचनथमभनिनोत्तौषधि
 श्यविश्वदयाश्वभनिवि
 विनपिपवनावकिन्ना
 मुभनिशाजानस्पद्य
 पुभनिनोविनोत्तौषधि
 सुचसार्द्धचसर्धभन्या
 द्याचयर्षीस्वगुनेक
 विविनाभनिपून्मीक
 ननस्वाहा ॥ ११ ॥

नन ८ पुष्टिकाकनिंभुम्
 म्मिर्धुं नन ८ अमनी
 भमर्द्धनवायपुष्टिका
 य ० ० ॥ १० ॥ दधामपू
 याश्यादुनिविधिक्रमलो
 पावर्णिस्वकन्दमातृति
 र्देलस्वनाथममनमि
 दुपवामर्द्धनाशोषधी
 शनवधकर्वयन्पुष्टि
 नमनवनिनासपनास
 वदार्द्धपुष्ट्यादुत्तौष
 यद्दस्वगुनेकविधिना
 पुष्टिपून्मीकनन ० ० ॥

वनिपुष्टिक ॥

धनशिवशक्तिकलसन्निधि
 दवनाभ्यायार्द्धिमालोका
 पुकाजालिपनिपून्मी ॥
 रक्ताद्यवन्दनयद्गोपवीन
 पुष्टाधपदीपनचसर्धकल्पी ॥

ननायवधन्यादिदामी ॥ य
 वधन्यनथममर्द्धकलाव
 पाषपवाकुलकुकालोमा
 षष्ठसिद्धार्थनाष्टवीहिकी ॥
 ॥ लाजासमिधपायस
 गुडादनदध्मदनजासी
 ननकवाक्कुशालकिंय
 नात्रिकलावदनीकुलपुष्ट
 यदिति ८ नात्रिकद
 यकभ्यपयकभ्यसमरव
 स्थनिलो नकनिलोभनप
 षाष्टिसंयुतुअलाभ्यगुला
 कंक्रमश्यावपुचन्दनगुठ
 वाधुनिस्वधर्म्ममूलखल
 पकोन ८ पुष्ट्यादुत्तौष
 र्धमिभनननमय ० ॥ ११ ॥
 लमन्मन्व ॥
 धनभ्यनर्द्धलिपदानी ॥
 भानिकुलपाभ्यनय
 कापसवल्लिपात ० ॥ १२ ॥
 भमनकाशसपात ० ॥
 भानिकालाकसुभ्रनर्द्ध
 लिपमन्म ० ॥ १३ ॥ ४०

नतस्थं वक क्रीडा वने य
 जमानना ॥ वाक् ॥ य
 जमानस्य धीमर्हि कुं धीम्
 मुकदेव पुनिमा पुनि छाक
 ऊजिनय हर्ष प्रभु निमि य
 धीर्ष प्रभु धी निस्सु सुहर्ष
 मसु ॥ धीर्ष वल्गो मनुजा
 न ॥ हरे सं ह स्थासु ॥
 अवाज्ज्धमस्त्वया य ॥
 जय जय लोद हि मध
 या कनका वपद य ॥ तु
 धु नि गृ म प्रभु स्या प्रभु
 निस्सु व सीपदा ॥ प्रभु नि
 सर्वदा नी पृभु नि प्र
 धु मद्र नी ॥ आया य न
 सपन्नम ॥ तु क्रादि व
 सवा न्द्रा ह नि ध्यन्ता
 त्रिनेदवगा ॥ न यन्तु य
 नधमगा हि स्त न्म सुवर्ष ॥
 पुष्प निगा ॥ ॥ देवी ग
 या ज्ञेय वाग न क ॥ स
 मिथका या व ध्य न स
 धुका वदा य ॥ ॥ अ
 वीसा प ॥ ॥ ॥ मन्त्रा धम ॥

सन्तु कलाङ्गस्मिन् लो
 धमनगा दिग्देवगा ॥ स
 पीता वनदा र वन्तु ग
 गमवाक्क ह लयः ॥ ॥
 वन्तु गाजा धर्म विद्रु धी
 र वन्तु पुजाः सखिनः
 सन्तु देवा ॥ ॥ देवा
 सन्तु देवा दि यजमाना
 सन्तु देवा दी नामा य
 गाय धर्म धर्म जन धन
 लक्ष्मी सन्तु निर्सीता नव
 दिन सन्तु धिपद्म ॥ ॥
 पद्म ॥ ॥ ॥ देवन्तु स
 धर्म सत्ता सखिनः सन्तु
 पद्म न्यका लवधी र व
 रु ॥ गा य धिपद्मः ॥ आ
 यजन्तु कना ॥ ॥ दे
 र वन्तु सिद्धि न सन्तु पुगा प
 व दि न सन्तु सर्व प नि प्र
 धु मसु ॥ ॥ जाय पा य
 मन्तु लक्ष्मी ॥ ॥ ॥ देव
 दया स्य पादा यद्ग न प न प
 द ॥ स मयदा ध र सन्तु ज
 धर्मा दि गाय ग प ध र न
 या ह र व क्क धा सी ग म य

श्रीमत्स्यमर्चनमप्यनि
 षट्कृतमष्टवर्दष्टाविष्टु
 पुक्कत्रमूर्तिस्त्वष्टुनिवर्द
 न्यमष्टरूपीवनादृष्ट ॥ ॥
 नकाशुक्तानिक्तमूर्तिपथ
 गतिपुनानिन्द्यासिमागत्वा
 सुत्वाथपुनवाविवृथपदग
 नेनीलिवर्जमष्टपुसिद्धागान्
 एभवात्तद्वत्तवतिरवगन्ना
 श्रीनिप्रकानुपवधमदामा
 नासुगर्हीजयेतिरुपपुदानि
 त्यनपाभिवाङ्गा ॥ ॥ ॥ ॥
 रूपसंस्कारिभिर्विदिभिभि
 वासंस्तिगाद्वगगायात्तुवावर्हि
 मध्यकलभपनिगामभुस्तु
 भिलवा ॥ ॥ सर्वसिक्तुदेवमभ
 हिमगेरुलोमनुसर्गपन्ना
 मद्रामनुविहीनाजयेनपनि
 विविद्धादाषाड्कमस्व ॥ ॥
 यत्तुत्वाथवनत्वेनसनिधिगु
 रिकाणाइकात्तवनत्वेपागाली
 दिव्यसिद्धिदित्त्वनेसरिगादि
 याचिन्नामनिभ ॥ सिद्धिर्द्विधा
 स्वमीनापनपनविभनंमन

उभक्त्यादयेनमस्यप्रसादा
 सत्त्वगुलवगामनिन्दवष्ट
 पुसन्वः ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 कपालाष्टस्वस्विदिभिर्वसि
 नाः स्वस्वमद्राः स्वप्रकाशा
 दिव्यादिगुरुभभवसिन्द
 विसदाऊन्मदवाङ्मय
 काशमृत्तुआगमः स्वनि
 एभगानगुन्वद्वक्तुस्त्रि
 याददागुलवगुवसममी
 यरूपप्रभुश्रुताम् ॥ ॥
 यदवायुक्तानामगुलगान
 सकलात्तननक्तुः पिभ
 चाथवर्षीयचमासासि
 शिगानसकलायवनेज
 जयागम ॥ ॥ यलानमः कर्त
 वलाभकवटपयभ
 वद्वैसुगीवचन्द्राष्टसुधीका
 सन्कुनिर्द्योनिनृजसुखय
 दंसक्तुनगाश्चलोक्त ॥ ॥
 कात्तवर्धनपुष्पाष्टकिनिनवि
 वसदाशस्यसिपुर्भुत्तगाद्व
 रूसंयुविपाष्टसकन्तपनि
 जाधमवैविष्टुजाष्टव ॥
 सत्त्वानोपालोनेवैरवमिस

कुलु मर्दि सिमदवकुमादि
 मरतां वृत्ता ॥ ॥ अथ
 मुसधुङ्गागपिपत्रादिनक्रन
 लभदावा॥ पुष्पाकुङ्गमि
 सर्वजश्रुयस्व ॥ ॥ ॥
 क॥ ॥ त्वीगा ॥ ग॥ ॥ ॥
 सीकि नस्वीच नाव अञ्क
 अञ्जेल त्वा नां दुष्टा त्व
 पनामज्य गो॥ कमी नो म
 नसावाचा त्वत्वा ना न्याग
 निर्मोम ॥ मन्तु ही न विफा ही
 नीर कही नीरु न ॥ ॥
 ऊपदा मावृ नी ही नीरु न
 निरु ल्य ग ल्य वय ॥ अ क
 नीवा अ ही नी व न ल्यु न ग
 दूता अ न ॥ ॥ यथ
 वा न पु ल जाल्म ॥ ॥ अ ग
 धा दि ॥ ॥ ॥ अ व अ क्रि या
 आ ॥ ॥ अ दि ॥ ॥ ॥ अ व अ क्रि
 ल्य न प ल्य क म म र्ज क
 ग ल्य न ॥ नो नो क स र्द ली
 द रि स प स ज ॥ स दा र व ॥
 ॥ ॥ अ न न ग अ धी धी दि ॥
 व क ल्य सर्व द व स स
 का क्क का जि ने न व ॥

क न म क म स र्द ली न क म
 र्ज क म स र्द ली ॥ ॥ अथ
 पा ग द क ना हि ध र्क ॥ ॥ क ना
 क ल्य पा ॥ व द नी ॥ व द नी ॥ ॥
 पि नी ॥ ॥ म लु ल्य प थ न र
 प नी ॥ ॥ अथ पृथ ग नी ॥ ॥
 अ निल क्का का य ॥ ॥ अ
 अ न क ल अ दि वि स र्ज नी ॥ ॥
 अ न ल व क्का वि स र्ज नी ॥ पु न्नी
 नी व वि स र्ज नी ॥ ॥ व क्का क
 अ न पु न्नी ना हि ध र्क ॥ ॥ अ
 थ क ना ना स र्द ली न ॥ ॥ व क्का
 सि द्दा य ॥ न म्भ र ग व नी र
 क म ली य र्ज न म ॥ ॥ व ली
 ग नी द्दा य ॥ ॥ क न व द सि न
 म ॥ ॥ स र्द ली ॥ ॥ पु न्नी न प थ अ
 जि क र्द ली य र्ज ली क प थ ॥
 ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 थ न ग जि स र्प य न र म य
 य म ली सा अ जि ने दि य लि
 द ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥ ॥
 न या य म न नि ग जि स र्ज
 य वि स र्ज नी ॥ ॥ न जि म
 म ली सा ॥ ॥ अ जि ने वि स र्ज नी
 य र्ज ॥ ॥ अ जि ने वा द न म्भ र
 न व दि वि स र्ज नी ॥ ॥ ग क्क र्द
 न ॥ ॥ अ अ सा र्ज सा न वा

रुकायुवक्षादथादवाक
 उगद्धरुगाभन॥कुमख॥
 नमस्कात्री॥ ॥अपराध
 रामपाय॥चुनैव॥आक
 जानयखादा॥ ॥न्यास
 लिकाय॥किनिरविषकी
 रुनाथरुद्धभुक्त्याय॥
 सर्वान्विसर्ग॥अनिस्वासे
 श्रीनीविरावथा॥नान्य
 लधुलकसैरानमदान
 वदिविषा॥निगन्म॥स
 यंसोऽभीष्मया॥ ॥यज्जमा
 नस्यामकद्वेवगामुनिपुनि
 माप्रतिष्ठाकृजानिगरु
 संपूर्णकनकमोहाभक्ति
 ॥अभिलक्ष्यपाया
 नमः॥पृथिनमः॥
 अर्थवाग्लभामुत्वीकय॥
धनासिलासनासुखसि
कापत्रियजमानैर्मिका
या॥रुखनेकुवनेगर्षी
॥ ॥अवभाकिपाल्यवद
वर्षकाय॥आकनमार्
नीसुग्लभदिकायाव॥ ॥
यज्जमानादिविषय
वन्दनसिद्धनमार्नीसु
लभदिविषय॥पवसुजका

सदिनपुष्करलोणीर्वा
 द॥ ॥यज्जमानयज्जमा
 नीमर्द्धनयावडिवभाकि
 कलभाकाय॥ ॥वाक्सी॥
 यादवीपेनमज्जनीदिगु
 लामयाचाखुसिद्धिप्रदा
 दानिद्रादिसमस्तद्विषय
 रुनीमागपुसन्नासि
 का॥अपूठकात्रिय॥अ
 वलीजनधनमिजादि
 नानक॥विद्यामान्यमहा
 सर्वविननरुणीकुडि
 काथाऽनिर्भी॥सगुलवि
 य॥ ॥वलिनुरुजावना
 दिक्काय॥लभमयर्त्तिभदि
 डिवर्कनयकुक्काय॥
 नागर्षनीवकाया॥
 यसन॥यज्जयज्जनी
 नसन॥अलोक्षीधक
 रिसन॥मालकाक्षाय
 व॥ ॥कोमानोपूजाय
 य॥यथविषयनमाल
 काधनकाव॥समयसु
 यनैःलाभादिदेवकाक
 नैकानीकानम॥धन
 यकुलोवयुवविमोयमा
 नुहलो॥ ॥वेपि

